



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 68]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 18, 2002/फाल्गुन 27, 1923.

No. 68]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 18, 2002/PHALGUNA 27, 1923

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महाविदेशालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 मार्च, 2002

अंतिम जांच-परिणाम

विषय :—नेपाल से जिक-आक्साइड के आयात से संबंधित पाटनरोधी-जांच

सं. 7/1/2001-डीजीएडी.—1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क) प्रक्रिया

निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है:-

- निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) को उपरोक्त नियमों के अधीन मै0 ट्रांसपैक इंडस्ट्रीज लि0 (टी आई एल), जिसका पंजीकृत कार्यालय कलाली रोड़, अटलाडरा

रोड़, बड़ोदरा में स्थित है और अपनी सहयोगी कंपनी मै० वैस्टर्न इंडिया लि० के साथ मै० डेमोसा कैमिकल्स लि०, जिसका पंजीकृत कार्यालय 105 ए, मित्तल टावर्स, 210, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021 में स्थित है, (जिन्हें इसके बाद याचिकाकर्ता भी कहा गया है) से घरेलू उद्योग की ओर से एक लिखित याचिका प्राप्त हुई है जिसमें नेपाल जनवादी गणराज्य (जिसे इसके बाद संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल की अथवा वहां से निर्यातित जिक आक्साइड (जिसे इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है। उक्त याचिका का मै० ऑल इंडिया जिक आक्साइड मैन्यूफैक्चर्स एशोसिएशन द्वारा भी समर्थन किया गया है। जांच की शुरुआत के बाद मै० जे.जी. कैमिकल्स, कोलकाता, मै० सिनोटैक्स, कोलकाता, मै० प्रगति कैमिकल्स, मुंबई, मै० जैम टेक्नो कैम, जयपुर और मै० मैटाल्को प्रा. इंडिया लि०, नई दिल्ली द्वारा भी उक्त याचिका का समर्थन किया गया है।

- ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर किए गए उक्त आवेदन की प्रारंभिक जांच से कुछ कमियां उजागर हुईं, जिन्हें याचिकाकर्ता द्वारा बाद में ठीक कर दिया गया था। अतः उक्त याचिका को समुचित ढंग से प्रलेखित माना गया था।
- iii) प्राधिकारी ने यथा-प्राप्त प्रथम-दृष्ट्या साक्ष्यों के आधार पर नेपाल से संबद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने उक्त नियम के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन का आरोप प्राप्त होने के बारे में नई दिल्ली स्थित नेपाल के दूतावास को सूचित किया था।
- iv) प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमाशुल्क कोड 2817.0001 के तहत वर्गीकृत नेपाल के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए दिनांक 19.3.2001 को भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना जारी की।
- v) प्राधिकारी ने दिनांक 6.8.2001 के प्रारंभिक जांच-परिणामों को अधिसूचित किया और प्रारंभिक जांच-परिणामों की एक प्रति ज्ञात हितबद्ध पक्षों को अग्रेषित की थी जिनसे पत्र की तिथि से 40 दिनों के भीतर प्रारंभिक जांच-परिणामों पर, अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।

- vi) प्राधिकारी ने नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति भी इस अनुरोध के साथ अग्रेषित की कि संबद्ध वस्तु के निर्यातक और अन्य हितबद्ध पार्टियों को उपरोक्त (v) में यथा निर्धारित समय सीमा के अंदर प्रारंभिक जांच-परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करने की सलाह दी जाए ।
- vii) प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) और उद्योग संघों को सार्वजनिक सूचना की प्रति अग्रेषित की और उनको नियम 6(2) के अनुसार लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया
- viii) जांच के दौरान निम्नलिखित हितबद्ध पार्टियों द्वारा उत्तर/सूचना दायर की गई थी-
1. मै0 आल इंडिया जिक आक्साइड मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली ।
 2. मै0 ए टी एम ए, नई दिल्ली ।
 3. मै0 नार्दर्न इंडिया कैमिकल्स लि0, चंडीगढ़ ।
 4. मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0, सोनापुर, नेपाल ।
 5. मै0 एशियन मैटल्स, बीरगंज, नेपाल
 6. मै0 श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा.) लि0, काठमांडु, नेपाल
 7. मै0 उन्नत इंडस्ट्रीज (प्रा.) लि0, दुहाबी, नेपाल
 8. मै0 स्वास्तिक मैटल इंडस्ट्रीज, बिराट नगर, नेपाल
 9. मै0 पशुपति मैटल इंडस्ट्रीज, बिराट नगर, नेपाल
- ix) प्राधिकारी ने दिनांक 22.11.2001 को सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक रूप से अपने विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया था । विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित रूप में दायर करने का अनुरोध किया गया था । पार्टियों को विरोधी पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने की सलाह दी गई थी और उनसे इनका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने कहा लिए कहा गया था ।
- x) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंश वाली सार्वजनिक फाइल अनुरोध करने पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई ।

- xi) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के दौरान भारत में निर्मित संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ।
- xii) प्रारंभिक जांच-परिणामों की घोषणा से पहले हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्क, जिन्हें अधिसूचित किए गए प्रारंभिक जांच-परिणामों में प्रकाशित किया गया है, सक्षिप्तता की वजह से इसमें दोहराया नहीं दिया गया है । तथापि, हितबद्ध पार्टियों द्वारा बाद में दिए गए तर्कों पर प्रारंभिक जांच परिणामों और/या इन जांच परिणामों में उचित रूप से कार्रवाई की गयी है;
- xiii) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधारों का खुलासा 1.3.2002 को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को कर दिया गया था और इन पर प्राप्त हुई टिप्पणियों पर भी इन जांच परिणामों में विधिवत विचार किया गया है ।
- xiv) *** यह चिह्न इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा ही माने जाने का द्योतक है ।
- xv) जांच अवधि 1.4.1999 से 30.9.2000 तक की है ।

ख) घरेलू उद्योग, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच

विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर प्रारंभिक जांच परिणामों और प्रकटन विवरण में भी विचार किया गया है । जिन विचारों पर प्रारंभिक जांच परिणामों और प्रकटन विवरण में पहले चर्चा नहीं की गई है और जो विचार प्रकटन विवरण के जबाब में अब व्यक्त किए गए हैं, नीचे दिए गए संगत पैरों में उन पर उस सीमा तक विचार किया गया है जिस सीमा तक ये नियमानुसार संगत हैं और मामले की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं । हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया है और जहां कहीं उचित समझा गया है, नीचे संगत पैरों में उन पर विचार किया गया है ।

ग) 1. विचाराधीन उत्पाद

किसी भी हितबद्ध पार्टी ने विचाराधीन उत्पादन के बारे में कोई अनुरोध नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पार्टी ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया है। इसलिए, प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की पुष्टि करते हैं जैसाकि प्रारंभिक जांच परिणाम के पैरा ग.। में माना गया है।

प्राधिकारी दोहराते हैं कि विचाराधीन उत्पाद जिंक आक्साइड है जिसका रासायनिक सूत्र जेड एन ओ है जो व्हाइट/ऑफ व्हाइट पाउडर है जिसका विभिन्न ग्रेडों में उत्पादन होता है अर्थात् रेगुलर ग्रेड (99%), आई पी ग्रेड (99%), फीड ग्रेड इत्यादि। उक्त उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 2817.0001 के तहत वर्गीकृत है। इस उत्पाद का उपयोग ऑटोमोबाइल टायरों के विनिर्माण और अन्य रबड़ की वस्तुओं, सल्फेट, क्लोराइड इत्यादि जैसे उच्च शुद्धता वाले जिंक रसायनों के विनिर्माण में होता है और इसका उपयोग सिरेमिक उद्योग की एक निविष्टि के रूप में और पशु चारे के विनिर्माण में एक संपूरक के रूप में होता है। जिंक आक्साइड का उत्पादन लघु क्षेत्र के लिए आरक्षित है। उक्त उत्पाद खुले सामान्य लाइसेंस (ओ जी एल) के तहत आयात योग्य है और इस पर 35% का मूल सीमा शुल्क लगता है। मौजूदा जांच में जिंक आक्साइड के सभी ग्रेड शामिल हैं।

2. घरेलू उद्योग का आधार

(क) घरेलू उद्योग

प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग ने आधार संबंधी मुद्दे पर अपने अनुरोधों को दोहराया है अर्थात् जिंक आक्साइड की खपत संबंधी आकड़ों से प्राप्त जिंक आक्साइड की कुल खपत और रबड़ का उत्पादन।

(ख) निर्यातक

निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं-

- (i) हमने एसोसिएशन से बाहर के विनिर्माताओं की कई सूचियां दी हैं जिनमें उत्पादन का आकलन आधार संबंधी मुद्दे की जांच के लिए किया जा सकता है। निविष्टि पद्धति द्वारा जिक आक्साइड के कुल उत्पादन की गणना विभिन्न कारकों की वजह से दोषपूर्ण है। जिक आक्साइड का उत्पादन जिक ड्रोस, जिक हाइड्रोआक्साइड और जिक ऐश से होता है। गणना में जिक ड्रोस, जिक हाइड्रोआक्साइड और जिक ऐश के आयातों को हिसाब में नहीं लिया गया है। जिक ड्रोस के लिए दिए गए आकड़े पूर्णतया गलत हैं। डी जी सी आई एंड एस और अन्य स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं में आयातों की पूरी मात्रा प्रदर्शित नहीं होती है। नेपाल से जिक आक्साइड के आयातों के विश्लेषण के आधार पर समायोजन किए जा सकते हैं जैसाकि हमारे जवाब के अनुसार जिक आक्साइड निर्यातकों के संबंध में डी जी सी आई एंड एस के आकड़ों में प्रदर्शित होता है।
- (ii) आल इंडिया जिक आक्साइड मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन के आधार के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बाहर रखा जाना चाहिए।
- (iii) आधार का निर्धारण करने हेतु द्विपक्षीय स्रोतों पर तब विचार किया जाना चाहिए जब प्रत्यक्ष सूचना उपलब्ध नहीं हो। यह अनुरोध किया जाता है कि जिक आक्साइड एसोसिएशन के अनुसार जांच अवधि में 125 एकक कार्यरत हैं। इनमें से लगभग 47 एसोसिएशन के सदस्य हैं। हमने लगभग अन्य 40 छिटपुट एककों के नाम दिए हैं। इसलिए, अधिकांश एककों के आकड़े स्वयः एककों से लिए जा सकते हैं।
- (iv) एक ओर जिक आक्साइड विनिर्माता एसोसिएशन यह दावा कर रही है कि ऐसे 300 एकक हैं जो सी आई आई को 600000 लाख टन का उत्पादन करते हैं। उन्होंने एक अन्य अभ्यावेदन दिया है जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि ऐसे 125 एकक हैं जो 300000 टन का उत्पादन कर रहे हैं। चाहे 600000 लाख टन के आकड़े लिए जाए या 300000 लाख टन के, याचिकाकर्ता

का आधार नहीं बनेगा । 40,000 टन के कुल उत्पादन पर याचिकाकर्ताओं का दावा पूर्णतः गलत है और यह कि सही आकड़े लगभग 75000 टन होने चाहिए ।

प्रकटन विवरण के उत्तर में निर्यातकों/उत्पादकों ने उल्लेख किया है कि:

- (i) घरेलू उद्योग के रूप में याचिकाकर्ताओं का आधार जांच शुरूआत के लिए एक पूर्वापेक्षा है । यह अनुरोध किया गया है कि अखिल भारतीय जिक आक्साइड विनिर्माता एसोसिएशन ने स्वतः सी आई आई को भारत में जिक आक्साइड के उत्पादन के संबंध में कुछ सूचना दी थी । यह निवेदन है कि यह सूचना कुल घरेलू उत्पादन के निर्धारण हेतु एक आधार के रूप में होनी चाहिए । इन आकड़ों से याचिकाकर्ताओं के पास घरेलू उद्योग के रूप में कोई आधार नहीं होगा ।
- (ii) प्रकटन में यथा प्रस्तावित कुल घरेलू उत्पादन की गणना किसी साक्ष्य पर आधारित नहीं है । भारत में कुल जिक की खपत का निर्धारण किया गया है और यह माना गया है कि इसमें से कछ प्रतिशत जिक आक्साइड का है । समूची कार्य विधि सिद्धांततः कुल खपत में जिक आक्साइड के हिस्से से संबंधित सैद्धांतिक कल्पनाओं पर आधारित है । इस पहलू पर किसी भी आकड़े के अभाव में कुल घरेलू उत्पादन का निर्धारण तथ्यतः गलत है ।
- (iii) आधार के अभाव में याचिका स्वीकार्य है । जहां तक दिनांक 5.1.2001 के जांच परिणामों पर विश्वास करने का संबंध है यह निवेदन है कि निर्यातक उन कार्यवाहियों की पार्टी नहीं थे, और इसलिए, न्याय के हित में माजूदा मामले में उक्त आधार पर रिकार्ड किए गए साक्ष्य के अनुसार विचार किया जाए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी प्रारंभिक जांच-परिणामों, सार्वजनिक सुनवाई और प्रकटन विवरण के उत्तर में निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों को नोट करते हैं ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण लघु उद्योग द्वारा किया जाता है । यद्यपि अखिल भारतीय जिक विनिर्माण एसोसिएशन ने देश में जिक आक्साइड के उत्पादन के ब्यौरे दिए हैं तथापि, प्राधिकारी की जानकारी में यह बात आई थी कि देश में जिक आक्साइड के उत्पादकों की कुल संख्या अखिल भारतीय जिक विनिर्माण एसोसिएशन द्वारा यथा उल्लिखित उत्पादकों से अधिक है । प्राधिकारी ने कुछ राज्यों में कुछेक उद्योग निदेशालयों से वास्तविक उत्पादन के ब्यौरों को प्राप्त किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै० ए टी एम ए ने इंगित किया है कि देश में जिक आक्साइड का कुल उत्पादन 65,000 एम टी है और 40% की खपत टायर उद्योग द्वारा की जाती है । ए टी एम ए ने टायर उद्योग द्वारा खपत की गई रबड़ की मात्रा का भी उल्लेख किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह टायर उद्योग द्वारा रबड़ की खपत करने के संबंध में भारतीय रबड़ पत्रिका द्वारा प्रकाशित आंकड़ों से भी मेल खाती है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि सभी लघु उद्योग के उत्पादकों के आंकड़े पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हो सकते हैं, प्राधिकारी ने अप्रत्यक्ष पद्धति द्वारा उत्पादन का परिकलन किया है । प्राधिकारी यह अनुरोध भी नोट करते हैं कि जिक आक्साइड का उत्पादन जिक मैटल, जिक हाइड्रोआक्साइड, जिक ड्रोस और जिक ऐश से किया जा सकता है । प्राधिकारी ने इन चारों कच्ची समाग्रियों के उत्पादन संबंधी मानदंडों के आधार पर देश में जिक आक्साइड के कुल घरेलू उत्पादन का परिकलन किया है ।

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और इंडिया जिक लीड डिवेलपमेंट एसोसिएशन के साथ बात चीत करने के पश्चात नोट किया कि देश में जिक के दो प्रमुख उत्पादक हैं । ये हैं- मै० हिन्दुस्तान जिक लि० और बिनानी जिक लि० । प्राधिकारी ने इंडिया जिक लीड डिवेलपमेंट एसोसिएशन और इन दोनों उत्पादकों से भी इन उत्पादकों द्वारा जिक के उत्पादन से संबंधित सूचना सीधे ही इकठ्ठी की है । प्राधिकारी ने रबड़, रसायन, ऑटोमोटिव क्षेत्र इत्यादि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में जिक की खपत की पद्धति की भी जांच की है । प्राधिकारी इंडिया जिक लीड डिवेलपमेंट से मिले जबाब और दोनों जिक उत्पादकों से सीधे मिले जबाब के आधार पर नोट करते हैं कि जांच अवधि में मै० हिन्दुस्तान जिक लि० द्वारा जिक का 145796 एम टी का कुल उत्पादन किया गया था और मै० बिनानी जिक लि० का उत्पादन 29161 एम टी का था । दोनों उत्पादकों ने देश में जिक आक्साइड विनिर्माताओं को क्रमशः 3706 एम टी और 3797 एम टी की बिक्री की थी । खपत की पद्धति से यह इंगित होता है कि देश में उत्पादित जिक का 4.28% जिक आक्साइड विनिर्माताओं द्वारा उपयोग किया जा रहा था । डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के अनुसार

जांच अवधि के दौरान आयातित जिंक पर इसी तरह की खपत पद्धति मानक लागू किए गए हैं। जिंक आक्साइड विनिर्माण क्षेत्र में खपत की गई आयातित जिंक का अनुपात 2660 एम टी बैठता था। दि इंडिया जिंक लीड डिवेलपमेंट एसोसिएशन ने यह उल्लेख किया है कि 175000 एम टी, जो कुल जिंक उत्पादन के 70-75% के बराबर है, की खपत गैलवेनाइजिंग क्षेत्र में होती है। इसमें से 10 से 15% जिंक ड्रोस के रूप में पुनः प्राप्त कर लिया जाता है। प्राधिकारी ने इस पद्धति से जिंक ड्रोस की उपलब्धता का मूल्यांकन करने हेतु उच्च बेंचमार्क अर्थात् 15% का संदर्भ लिया है। गैलवेनाइजड पद्धति के जरिए इसप्रकार से उपलब्ध हुआ जिंक ड्रोस 26250 एम टी बैठता है। गौण स्रोत खनिज एवं धातु समीक्षा (एम एम आर) के अनुसार जांच अवधि के दौरान जिंक ड्रोस का आयात 1157 एम टी का हुआ है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि तकनीकी खपत मानदंडों के अनुसार (एक्जिम नीति के तहत खपत अग्रिम लाइसेंस के मानदंडों के साथ भी सह-संबद्ध) 850 एम टी जिंक से 1000 एम टी जिंक आक्साइड प्राप्त होता है जबकि 900 एम टी जिंक ड्रोस से 1000 एम टी जिंक आक्साइड प्राप्त होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जहां तक जिंक हाइड्रोआक्साइड का संबंध है, यह प्राइम जिंक पद्धति से जिंक आक्साइड के उत्पादन का एक मध्यवर्ती उत्पाद है और जांच अवधि के दौरान जिंक हाइड्रोआक्साइड का कोई आयात नहीं हुआ है। जिंक ऐश जिंक स्क्रेप वेस्ट रूट से उपलब्ध होती है। 1999-2000 के दौरान जिंक स्क्रेप का कुल आयात 45479 एम टी का हुआ है। जिंक की अंतिम उपयोग पद्धति और 0.85 के प्राप्ति अनुपात के आधार पर सभी स्क्रेपों पर विचार करते हुए, जिसे जिंक आक्साइड में परिवर्तित करने हेतु उपयोग में लाया जाता है। जिंक ऐश/जिंक स्क्रेप रूट से उत्पादित कुल जिंक आक्साइड 915 एम टी बनता है। इसलिए, जिंक के उपरोक्त स्रोतों के आधार पर जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, कुल जिंक आक्साइड उत्पाद 41192 एम टी बनता है। यह अनुमान लगाया गया है कि गैलवेनाइजिंग क्षेत्र से आयातित सभी जिंक ड्रोस का उपयोग केवल जिंक आक्साइड के उत्पादन में होता है। उन उत्पादकों के उत्पादन को छोड़कर जिन्होंने नियम 2(ख) के अनुसार जांच अवधि में नेपाल से जिंक आक्साइड का आयात किया है, कुल घरेलू उत्पादन 32942 एम टी बनता है। इसके अनुसार, घरेलू उत्पादन में घरेलू उद्योग का हिस्सा 31.7% निकलता है।

रबड़ उद्योग में जिंक आक्साइड की खपत के अनुसार, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने रबड़ उद्योग को जिंक आक्साइड के अपने उत्पादन के 95% से भी ज्यादा की बिक्री

की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एम टी एम ए के उत्तर के अनुसार रबड़ उद्योग में जिक्र आक्साइड की खपत 25000 एम टी है जबकि टायर क्षेत्र में रबड़ की खपत 408400 एम टी है। चूंकि दोनों आंकड़े सह-संबद्ध नहीं हैं यदि टायर क्षेत्र में जिक्र आक्साइड के 2% उपयोग मानक लागू किए जाएं, प्राधिकारी ए टी एम ए द्वारा यथा उल्लिखित टायर उद्योग द्वारा जिक्र आक्साइड की 40% खपत के उपयोगिता अनुपात, रबड़ उद्योग में जिक्र के 2% के उपयोग जिसका एक्जिम नीति में अग्रिम लाइसेंस^{के} लिए उपलब्ध निविष्टि-निर्गत मानदंडों के तहत उल्लेख किया गया है, और 1999-2000 में रबड़ की कुल खपत के आधार पर नोट करते हैं कि 1999-2000 में जिक्र आक्साइड का कुल उत्पादन 20420 एम टी बनता है जो याचिकाकर्ता की स्थिति को भी बरकार रखता है

प्राधिकारी यह मानते हैं कि जिक्र आक्साइड उद्योग, जो कि लघु क्षेत्र में फैला है, के विशिष्ट स्वरूप को ध्यान में रखते हुए निविष्टि अथवा उत्पादन पद्धति के आधार पर जिक्र आक्साइड उत्पादन की पद्धति तर्क संगत, वैज्ञानिक एवं विश्वसनीय है।

उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी का मानना है कि याचिकाकर्ता नियम 5(क) और 5(ख) के अनुसार याचिका को दायर करने के आधार को पूरा करते हैं और नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्राधिकारी पुनः स्मरण करते हैं और दिनांक 6.8.2001 के प्रारंभिक जांच परिणाम के पैरा ग(1) की पुष्टि करते हैं।

3) सामान वस्तुएं

प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस मुद्दे पर किसी भी हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई अनुरोध नहीं किया गया है और प्राधिकारी इस संबंध में 6.8.2001 के प्रारंभिक जांच परिणाम के पैरा ग(2) का स्मरण करते हैं और दोहराते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा यथा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु विभिन्न अंतिम उपयोग क्षेत्रों में तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है और उनका उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। हितबद्ध पार्टियों में से एक पार्टी ने यह उल्लेख किया है कि संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का उत्पादन विभिन्न विनिर्माण प्रक्रियाओं द्वारा होता है और चूंकि

घरेलू विनिर्माताओं के पास पूर्ण क्षमता उपयोग है, जिसका तात्पर्य यह है कि संबद्ध देश से आयातित वस्तु का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होता है और यह घरेलू बाजार में उत्पादित वस्तु के सामान वस्तु नहीं है। प्राधिकारी विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दी गई सूचना और द्वितीयक स्रोतों से यथा उपलब्ध सूचना के आधार पर नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातित वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं की खपत आम उपभोक्ताओं द्वारा एक दूसरे के स्थान पर की गई है।

इसलिए, इस बात को देखते हुए प्राधिकारी का मानना है कि संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर सामान वस्तुएं हैं और प्रारंभिक जांच परिणाम के पैरा ग(2) की पुष्टि करते हैं।

4. सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं-

क) घरेलू उद्योग

- (i) निर्यातकों ने अगोपनीय रूप में पर्याप्त सूचना का प्रकटन नहीं किया है।
- (ii) मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0, नेपाल ने अतिरिक्त सूचना को दबाया है और उनके जबाब को अस्वीकार किए जाने की आवश्यकता है। नेपाल में जिक आक्सइड की उत्पादन लागत भारत में उत्पादन लागत से कम नहीं हो सकती है।
- (iii) मै0 एशियन मैटल्स ने घरेलू बाजार में कुछ घटिया क्वालिटी का माल बेचा था और इसलिए हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे घरेलू बिक्री कीमत का निर्धारण करते समय गुणवत्ता का समायोजन करें।
- (iv) मै0 पशुपति मैटल इंडस्ट्रीज, बिराट नगर, नेपाल द्वारा दिए गए उत्तर की अनदेखी करने की आवश्यकता है और इस निर्यातक के लिए मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग के आधार पर अपनाया

गया सामान्य मूल्य काफी कम होने के कारण सही नहीं है और इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना पर सामान्य मूल्य निर्धारण करने हेतु विचार किया जाना चाहिए।

- (v) मै0 उन्नत इंडस्ट्रीज (प्रा.) लि0, नेपाल ने सूचना को दबाया है और इसलिए हमें अपने मामले में भारी बाधा आ रही है। कंपनी ने रिसाइकल्ड सामग्री की बात की है लेकिन उक्त मुद्दे को सुस्पष्ट करने का कष्ट नहीं उठाया है।

प्रकटन विवरण के बाद निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं-

प्रकटन विवरण में हम पाटन मार्जिन के निर्धारण का पूर्ण समर्थन करते हैं।

यद्यपि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उन निर्यातकों के बारे में जिन्होंने अन्य सहायक निर्यातकों के आधार पर व्यवहार्य घरेलू बिक्रियां नहीं की थी, सामान्य मूल्य का पहले ही निर्धारण कर लिया है, हम दोहराते हैं कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय न केवल निर्दिष्ट प्राधिकारी पर पूर्णतया बाध्यकारी है बल्कि इस मुद्दे पर काफी हद तक सुस्पष्ट है। इसके अलावा, यह अन्य जांच कर्ता प्राधिकारियों (विशेषतः ई यू में) की प्रणाली है कि जबाब देने वाले अन्य निर्यातकों की बिक्रियों पर उन निर्यातकों के संबंध में निर्धारण हेतु विचार किया जाता है, जिन्होंने जांच अवधि में व्यवहार्य घरेलू बिक्रियां नहीं की हैं।

इसलिए, हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से इस संबंध में प्रकटन विवरण की पुष्टि करने हेतु अनुरोध करते हैं।

ख. निर्यातक

- (i) मै0 स्वास्तिक मेटल लिमिटेड ने यह इंगित किया है कि उनकी घरेलू बिक्री भारत को किए गए निर्यात के 5% से कम है और यह संभव नहीं है कि घरेलू बिक्री तथा निर्यात बिक्री में उचित तुलना की जा सके।

- (ii) मै0 स्वास्तिक मेटल लिमिटेड ने यह भी इंगित किया है कि व्यापार के स्तर तथा उपभोक्ताओं के प्रकार के कारण समायोजन की अनुमति नहीं देना पूर्ण रूप से अनुचित है । उन्होंने यह भी इंगित किया है कि दोनों बाजारों की मात्राएं भिन्न हैं और इसलिए समायोजन की मांग की गई है ।
- (iii) मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 ने यह इंगित किया है कि मात्रा के आधार पर मै0 गोरेखाली रबड़ उद्योग तथा मै0 बालकराम विनोद कुमार की बिक्रियों के बीच की गई तुलना उचित नहीं है यह इंगित किया गया है कि 40 मी.टन की निर्यात बिक्री मात्रा के मुकाबले घरेलू बिक्री औसतन 25 किग्रा से 3 मी.टन तक हुई है । इसलिए मात्रा संबंधी छूट पर विचार किए जाने की आवश्यकता है । मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग ने यह भी इंगित किया है कि मै0 नवभारत मैटेलिक तथा मै0 फर्टिकेम इंडिया द्वारा इंगित ****% तक का लाभ कमाया जा रहा है और इसलिए व्यापार के स्तर पर समायोजन की मांग की गई है ।
- (iv) मै0 पशुपति मेटल इंडस्ट्रीज ने इंगित किया है कि यदि उनकी घरेलू बिक्रियों को स्वीकार नहीं किया जाता है तब विनिर्माण लागत पर विचार किया जाना चाहिए जिस पर अधिक लाभ कमाया गया है ।
- (v) मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग ने इंगित किया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उत्पादन लागत संबंधी मानदंड सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि नेपाल का घरेलू बाजार छोटा है और नेपाल से किसी अन्य देश को कोई निर्यात नहीं हुआ है । इस दृष्टिकोण से कोई पाटन नहीं हुआ ।

प्रकटन के बाद, निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं-

1. मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लिमिटेड, सोनपुर

- (i) . हालांकि प्राधिकारी यह मानते हैं कि निर्यातक की बिक्री कीमत नीति मुख्य रूप से सेवा तथा गुणवत्ता पर आधारित है, तथापि इस कारण से कोई समायोजन नहीं दिया गया है । यह अनुरोध किया जाता है कि इस बात को स्वीकार करते हुए कि नेपाल के बाजार में जिक आक्साइड की बेहतर किस्म की बिक्री की गई थी, इन कारकों के कारण उचित समायोजन प्रदान किया जाना चाहिए । प्राधिकारी ने अन्य उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों पर इस आधार पर विचार नहीं किया है

कि उनके उत्पाद घटिया किस्म के हैं और इसलिए वे तुलनीय नहीं हैं। यह निवेदन है कि इसी तर्क के आधार पर नेपाल के स्थानीय बाजार में बिक्री किए गए बेहतर किस्म के जिंक आक्साइड को तुलनीय नहीं कहा जा सकता है। निदेशालय के अधिकारियों द्वारा किया गया सत्यापन मुख्य उपभोक्ता के परिसर में भी किया गया था, जिसने इस बात की पुष्टि की है कि कीमत के निर्धारण में गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण मुद्दा था और नेपाल के स्थानीय बाजार में बेची गई सामग्री काफी अधिक शुद्धता वाली थी। इन परिस्थितियों में, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए घरेलू बिक्री कीमत पर भरोसा करना असंगत है और यह कानून के अनुरूप नहीं है।

- (ii) यह निवेदन किया जाता है कि घरेलू तथा निर्यात बाजार में व्यापार का स्तर बिल्कुल भिन्न है। आंकड़े स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि नेपाल के बाजार में की गई बिक्रियां भारतीय बाजार में की गई निर्यात बिक्री की तुलना में काफी कम हैं। उपभोक्ताओं के भी दो प्रकार हैं, वास्तविक उपयोगकर्ता तथा व्यापारीगण। यह तथ्य कि कोई उपभोक्ता, जिसने बड़ी मात्रा में खरीद की हो, बेहतर कीमत के लिए योग्य हो जाता है, किसी बाजार में सामान्य घटना है। बिक्री बीजक में छूट के साथ निवल कीमत दर्शाई गई है। बिक्रियों के आकार में स्पष्ट भिन्नता के मद्देनजर समायोजनों की अनुमति दी जानी चाहिए।
- (iii) यह निवेदन है कि पाटन पूर्ण रूप से नहीं किया गया है।

2. मै0 एशियन मेटल्स, बीरगंज

- (i) यह निवेदन है कि चूंकि मै0 एशियन मेटल्स द्वारा घरेलू बिक्रियों की गई हैं इसलिए यह अनुमति देने योग्य नहीं है कि दूसरे विनिर्माता की घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाए। निवेदन है कि विचाराधीन उत्पाद जिंक आक्साइड है। गुणवत्ता के संबंध में कोई और मानदंड नहीं है। चूंकि मै0 एशियन मेटल्स द्वारा घरेलू बाजार में की गई बिक्रियां निश्चित रूप से जिंक आक्साइड की हैं, जो जांचाधीन उत्पादन हैं, इसलिए ये निश्चित रूप से सामान्य मूल्य के निर्धारण का आधार है न कि किसी अन्य विनिर्माता की बिक्री कीमत। यह तथ्य कि ये बिक्रियां किसी भिन्न गुणवत्ता की रही होगी अधिक से अधिक समायोजन का एक मुद्दा है। यह

निवेदन है कि, यदि आवश्यक हो, तो गुणवत्ता में अंतर के संदर्भ में उचित सामयोजन किया जा सकता है। गुणवत्ता के आधार पर इन बिक्रियों की अनुदेखी नहीं की जा सकती है। इसके आलावा इस बात का सुझाव देने के लिए कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं है कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 द्वारा बेचा गया जिंक आक्साइड मै0 एशियन मैटल्स द्वारा निर्यात किए गए जिंक आक्साइड की गुणवत्ता से तुलनीय है यह और अधिक संबद्ध हो जाता है क्योंकि प्राधिकारी खुद यह मानते हैं कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 द्वारा नेपाल के बाजार में बेचा गया जिंक आक्साइड बेहतर गुणवत्ता वाला है। यह निवेदन है कि गुणवत्ता के आधार पर मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 द्वारा नेपाल के बाजार में की गई बिक्री मै0 एशियन मैटल्स के निर्यात से तुलनीय नहीं है, इसलिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उनके आंकड़ों को स्वीकार करना अनुचित है।

- (ii) आगे यह निवेदन है कि मै0 हलदर टॉपसू के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय वर्तमान मामले के तथ्यों के लिए लागू नहीं होता है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने केवल यह निर्णय दिया है कि निर्यातकों द्वारा घरेलू बिक्री नहीं किए जाने पर उक्त देश अथवा क्षेत्र के अन्य विनिर्माताओं की बिक्रियों पर विचार किया जा सकता है। यह निवेदन है कि न्यायालय का निर्णय यह नहीं है कि संबद्ध निर्यातक की घरेलू बिक्रियों को, अन्य विनिर्माताओं की बिक्रियों को तरजीह देते हुए रद्द किया जा सकता है। इस प्रकार का दृष्टिकोण उपरोक्त निर्णय तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9क के विपरीत होगा। यह अनुरोध किया जाता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण एशियन मैटल्स की घरेलू बिक्रियों अथवा इसके बदले उत्पादन लागत के आधार पर किया जाए।

3. मै0 श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा.) लि0

यह निवेदन है कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 द्वारा नेपाल के बाजार में बेचा गया जिंक आक्साइड मै0 श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा.) लि0 द्वारा विनिर्मित जिंक आक्साइड से तुलनीय नहीं है। मै0 पशुपति आक्साइड द्वारा विनिर्मित तथा घरेलू बाजार में बिक्री किए गए जिंक आक्साइड की

गुणवत्ता काफी अच्छी है और इसलिए इसकी कीमत अधिक है। वस्तुतः अच्छी गुणवत्ता के कारण नेपाल के स्थानीय बाजार में मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 का एकाधिकार है। ऐसी परिस्थितियों में उन बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना पूर्ण रूप से अनुचित है क्योंकि यह उत्पाद तुलनीय नहीं हैं। निवेदन है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत के आधार पर किया जाए और इसका निर्धारण नेपाल के बाजार में बेचे गए उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद की बिक्री कीमत के आधार पर नहीं किया जाए। हलदर टॉपसू के मामले में लिया गया निर्णय लागू नहीं होता है क्योंकि मै0 पशुपति आक्साइड द्वारा नेपाल के बाजार में की गई बिक्री तुलनीय वस्तुओं की नहीं रही है।

4. मै0 उन्नत इंडस्ट्रीज (प्रा.) लि0

प्राधिकारी ने इस आधार पर घरेलू बिक्रियों की अनदेखी कर दी है क्योंकि घरेलू बाजार में बेची गई वस्तुएं पुनर्निर्मित कच्ची सामग्री से विनिर्मित हैं, इसलिए यह निर्यात वस्तुओं से तुलनीय नहीं है। इस संबंध में यह निवेदन है कि नेपाल तथा भारत में जिंक आक्साइड का विनिर्माण विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, जिंक इनगाट्स, जिंक ड्रॉस, जिंक ऐश इत्यादि से किया जाता है। कच्ची सामग्री का प्रभाव, उक्त सामग्री से जिंक आक्साइड को प्राप्त करने की दर पर पड़ता है लेकिन इसका प्रभाव तैयार जिंक आक्साइड की गुणवत्ता पर नहीं पड़ता है। इसलिए भारतीय बाजार तथा नेपाल के बाजार में बेचा गया जिंक आक्साइड तुलनीय है। वस्तुतः हम यह समझते हैं कि याचिकाकर्ता भी जिंक आक्साइड का विनिर्माण पुनर्निर्मित सामग्रियों से करते हैं और इसे उसकी हैसियत तथा क्षति के प्रयोजनार्थ ध्यान में रखा गया है। यह भी निवेदन है कि यदि प्रारंभिक कच्ची सामग्री के आधार पर विभेद किया जाता है तब पाटन तथा क्षति के लिए प्रारंभिक कच्ची सामग्री के आधार पर अलग अलग मार्जिन का निर्धारण किया जाए। किसी भी दशा में मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग लि0 द्वारा बेची गई वस्तुएं गुणवत्ता के आधार पर इस निर्यातक द्वारा विनिर्मित जिंक आक्साइड से तुलनीय नहीं है। हलदर टॉपसू का निर्णय लागू नहीं होता है क्योंकि इसमें कोई ऐसी अवधारणा नहीं है कि अन्य विनिर्माताओं की बिक्रियों को तरजीह देते हुए निर्यातक की घरेलू बिक्री की अनदेखी कर दी जाए।

5. मै0 स्वास्तिक मेटल इंडस्ट्रीज

यह निवेदन है कि पशुपति उद्योग की घरेलू बिक्रियां इस निर्यातक की बिक्रियों से तुलनीय नहीं हैं । इसलिए एकमात्र विकल्प यह है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत के आधार पर किया जाए । यदि इस आधार को स्वीकार कर लिया गया तब पाटन का कोई मार्जिन नहीं होगा । हलदर टॉपसू का निर्णय लागू नहीं होता है क्योंकि यह तुलनीय वस्तुओं से संबंधित है और यह उन वस्तुओं के लिए नहीं है जिनकी गुणवत्ता में काफी अंतर है ।

6. मै0 पशुपति मेटल इंडस्ट्रीज

यह निवेदन है कि नेपाल के बाजार तथा भारतीय बाजार की वस्तुएं भिन्न-भिन्न गुणवत्ताओं वाली हैं । इन परिस्थितियों में गुणवत्ता तथा कीमत के बीच एक विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है । निर्यात की तुलना में स्थानीय बाजार में की गई बिक्रियों की गुणवत्ता कुछ मामलों में घटिया रही है । यह निवेदन है कि इस आधार पर उचित समायोजन किया जा सकता है । आगे यह निवेदन है कि किसी भी दशा में मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग की बिक्रियां तुलनीय नहीं हैं क्योंकि ये वस्तुएं अच्छी गुणवत्ता वाली हैं । इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण या तो इस निर्यातक द्वारा की गई बिक्रियों के आधार पर किया जाए अथवा उत्पादन लागत के आधार पर ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

धारा 9क(i) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो यो विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में

बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

- (क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या
- (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत,

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

सामान्य मूल्य और कारखानागत निर्यातक कीमत के निर्धारण का ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

1. मैसर्स पशुपति आक्साइड उद्योग लि०, सोनपुर, नेपाल

प्राधिकारी विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोध नोट करते हैं । प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का संदर्भ लिया है और घरेलू बिक्री कीमत पर ऋण लागत और संचालन के कारण समायोजनों पर विचार किया है । जहां तक व्यापार के स्तर संबंधी समायोजन और मात्रा में छूट के समायोजन का संबंध है, प्राधिकारी वह बात नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री केवल वास्तविक प्रयोक्ताओं को की गई है और जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में किसी व्यापारी को बिक्री नहीं की गई है । अतः इस बाजार में व्यापार स्तर के कारण कीमत भिन्नता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है । प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि निर्यातक द्वारा किसी अतिरिक्त बिक्री के कारण और घरेलू बाजार में वास्तविक प्रयोक्ताओं को प्रत्यक्ष बिक्री के

कारण किए गए वितरण व्यय की मात्रा स्पष्ट नहीं है। प्राधिकारी यह बात भी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में निर्यातक की बिक्री कीमत नीति में मुख्यतः दो मानदंडों सेवा और गुणवत्ता पर विचार किया गया है और घरेलू बाजार में वास्तविक प्रयोक्ता होने के कारण ग्राहकों से किसी अतिरिक्त कीमत वसूली के कोई साक्ष्य नहीं हैं। अतः प्राधिकारी ने व्यापार स्तर के कारण किसी समायोजन की अनुमति नहीं दी है। साथ ही घरेलू बाजार और निर्यात बाजार दोनों बिक्री दस्तावेजों में अधिक माल की बिक्री के कारण कोई छूट दिए जाने के कोई संकेत नहीं हैं। अतः प्राधिकारी ने मात्रा संबंधी छूट के कारण किसी समायोजन की अनुमति नहीं दी है क्योंकि ऐसे कोई साक्ष्य नहीं हैं।

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि प्रकटीकरण विवरण में यह इंगित किया गया है कि घरेलू बाजार में निर्यातक द्वारा बेचे गए सामान की गुणवत्ता उत्तम है और ऐसी वस्तुओं के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए इन घरेलू बिक्रियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। प्राधिकारी का यह मानना है कि निर्यातक ने केवल प्रकटीकरण विवरण के प्रत्युत्तर में घरेलू बाजार में उत्तम गुणवत्ता वाले सामान के संबंध में तर्क दिया है और यह तर्क जांच पड़ताल अथवा जांच के समय कभी नहीं दिया गया था। निर्यातक ने यह संकेत दिया था कि घरेलू बाजार में बेहतर कीमत वसूली सेवा और गुणवत्ता के कारण है और यह कि प्राधिकारी ने इस पर निर्यातक के इस दावे के संदर्भ में विचार किया है कि घरेलू कीमत वास्तविक प्रयोक्ताओं को इसकी बिक्री करने के कारण अधिक है। गुणवत्ता का मुद्दा किसी गुणवत्ता समायोजन अथवा निर्यात कीमतों के साथ अतुलनीय होने के कारण घरेलू बिक्रियों की अनदेखी करने के प्रयोजनार्थ दावा करने के लिए निर्यातक द्वारा स्वतः ही नहीं उठाया गया था। अतः प्राधिकारी घरेलू बिक्री कीमत की अनदेखी करने के इस तर्क पर विचार करने और उत्पादन लागत पर विश्वास करने का औचित्य नहीं पाते हैं।

अतः प्राधिकारी ने ऋण लागत और संचालन के कारण क्रमशः**** डालर/मी.टन और *** डालर/मी.टन की सीमा तक समायोजन की अनुमति दी है।

इन समायोजनों के आधार पर सामान्य मूल्य *** डालर/मी.टन बनता है।

जहाँ तक कारखानागत निर्यात कीमत का संबंध है, प्राधिकारी ने एफ ओ बी कीमत पर संचालन, निर्यात कर, उद्गम प्रमाण-पत्र प्रभारों, शुल्क वापसी, बैंक गारंटी, कमीशन और ऋण के कारण जांच अवधि के दौरान क्रमशः *** डालर/मी.टन, *** डालर/मी.टन, *** डालर/मी.टन *** डालर/मी.टन, *** डालर/मी.टन, *** डालर/मी.टन, *** डालर/मी.टन और *** डालर/मी.टन की सीमा तक समायोजन की अनुमति दी है।

उपरोक्त समायोजनों के आधार पर कारखानागत निर्यात कीमत *** डालर/मी.टन आती है।

2. मैसर्स एशियन मेटल्स, बिरगंज, नेपाल

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि निर्यातक ने घरेलू बाजार में घटिया गुणवत्ता वाले माल की बिक्री है और उसकी घरेलू बिक्री कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए संबद्ध वस्तु के निर्यात की कीमत से नहीं की जा सकती है। इस बारे में प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि धारा 9क(1) के अनुसार सामान्य मूल्य का तात्पर्य उस समान वस्तु के लिए सामान्य व्यापार प्रक्रिया नियमों के अनुसार यथा निर्धारित किसी निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में उपयोग के निमित्त हो।

इसके प्रत्युत्तर में निर्यातक ने प्रकटीकरण विवरण में यह उल्लेख किया है कि विचाराधीन उत्पाद केवल जिंक आक्साइड है और गुणवत्ता के संबंध में कोई और परिमाण नहीं दिया गया है। गुणवत्ता में यह अंतर अधिक से अधिक समायोजन का मुद्दा हो सकता है और घरेलू बिक्रियों की अनदेखी नहीं की जा सकती है। इस बात को दर्शाने के लिए रिकार्ड में कुछ भी उपलब्ध नहीं है कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग द्वारा बेचा गया जिंक आक्साइड मै0 एशियन मेटल्स द्वारा किए गए निर्यात के तुलनीय गुणवत्ता वाला है। इन अनुरोधों को नोट करते हुए प्राधिकारी यह निर्णय लेते हैं कि जांच अवधि में निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत नेपाल की प्रचलित घरेलू कीमत से काफी कम है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक द्वारा यह इंगित किया गया है कि ये वस्तुएं घटिया गुणवत्ता वाली हैं। निर्यातक ने किसी भी समय गुणवत्ता के कारण किसी प्रकार के समायोजन का दावा नहीं किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि भारत को निर्यात की गई तुलनीय वस्तुओं के लिए आकलित उत्पादन

लागत के साथ तुलना के आधार पर इस प्रकार की घटिया गुणवत्ता वाली वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमतें भी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं होंगी । इसलिए प्राधिकारी निर्णय लेते हैं कि घरेलू वस्तु चूंकि घटिया गुणवत्ता वाली है, इसलिए उसकी कीमतें निर्यातक द्वारा जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात की गई वस्तुओं की कीमत से तुलनीय नहीं हैं ।

इस संबंध में प्राधिकारी मै0 हलदर एंड टॉपसू (डेनमार्क से कैटलिस्ट का निर्यात) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्मरण करते हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि समान वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत के उपलब्ध नहीं होने की दशा में धारा 9क (1) (ग) के साथ पाठित उक्त फैसले से नेपाल के अन्य उत्पादक/निर्यातक की समान वस्तु की प्रतिनिधिक घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ लेने की अनुमति मिलती है । प्राधिकारी ने इस निर्यातक के लिए भी सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए उस अन्य उत्पादक/निर्यातक की घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ लिया है जो जांच अवधि सहित पिछले कुछ समय से घरेलू बाजार में संबंधित वस्तु की बिक्री पर्याप्त मात्रा में करते आ रहे हैं ।

इसलिए सामान्य मूल्य का संदर्भ *** डालर/मी.टन के रूप में लिया गया है ।

प्राधिकारी ने कारखाना द्वारा निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए बीमा, निर्यात कर, शुल्क वापसी तथा बैंक गारंटी कमीशन के कारण एफओबी निर्यात कीमत से क्रमशः ***, ***, *** तथा *** डालर/मी.टन तक के समायोजनों पर विचार किया है ।

कारखाना द्वारा निर्यात कीमत *** डालर/मी.टन मानी गई है ।

3. मै0 श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा.) लि0, काठमांडू, नेपाल

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कोई बिक्री नहीं की है और न ही उसने जांच अवधि के दौरान भारत के अलावा अन्य देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने यह इंगित किया है कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ उनके लिए नहीं लिया जा सकता है क्योंकि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग घरेलू बाजार में गुणवत्ता वाले जिक आक्साइड की बिक्री करता है । मै0 हलदर एंड टॉपसू के मामले में लिया गया निर्णय भी लागू नहीं होता है क्योंकि वस्तुएं तुलनीय नहीं हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 पशुपति आक्साइड उद्योग की बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में हैं और यह नेपाल में जिक आक्साइड की घरेलू बिक्री कीमतों की प्रतिनिधिक है । निर्यातक ने गुणवत्ता के कारण किसी समायोजन का उल्लेख नहीं किया है जिसे भारत के लिए उनकी बिक्री कीमत में समायोजन के मामले में प्रदान किया जा सके । इस स्थिति में प्राधिकारी निर्णय लेते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण धारा 9क(1)(ग) तथा मै. हलदर एंड टॉपसू के मामले में लिए गए निर्णय के अनुसार किया जाए ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि धारा 9क(1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य से व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु के लिए उप-धारा (6) के तहत बने नियमों के अनुसार यथा निर्धारित तुलनीय कीमत तब इंगित होती है जब यह निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में खपत के लिए आशयित हो ।

इस संबंध में प्राधिकारी मै0 हलदर एंड टॉपसू (डेनमार्क से कैटलिस्ट का निर्यात) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्मरण करते हैं । प्राधिकारी ने नेपाल के उस अन्य उत्पादक/निर्यातक की समान वस्तु की प्रतिनिधिक घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ लिया है जो जांच अवधि (पीओआई) सहित पिछले कुछ समय से घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री पर्याप्त मात्रा में करता आ रहा है । प्राधिकारी ने नेपाल के अन्य उत्पादक/निर्यातक के सामान्य मूल्य का संदर्भ इस निर्यातक के लिए भी प्रतिनिधिक सामान्य मूल्य के रूप में लिया है । सामान्य मूल्य *** डालर/मी.टन बैठता है ।

प्राधिकारी ने कारखाना द्वारा निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए बीमा, निर्यात कर, शुल्क वापसी तथा बैंक गारंटी कमीशन के कारण एफओबी निर्यात कीमत से क्रमशः ***, ***, *** तथा *** डालर/मी.टन तक के समायोजनों पर विचार किया है ।

कारखाना द्वारा निर्यात कीमत *** डालर/मी.टन मानी गई है ।

4. मै0 उन्नत इंडस्ट्रीज (प्रा.) लि0, दुहाबी, नेपाल

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने घरेलू बाजार में उस संबद्ध वस्तु की बिक्री की है जो पुनर्निर्मित कच्ची सामग्री से विनिर्मित है और यह कि ऐसी पुनर्निर्मित वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत तथा उत्पादन लागत भारत में निर्यात की गई संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत से काफी भिन्न है ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रकटन के जबाब में निर्यातक ने यह इंगित किया है कि नेपाल में तथा भारत में जिंक आक्साइड का विनिर्माण विभिन्न प्रकार की कच्ची सामग्रियों से किया जाता है और यह कि कच्ची सामग्री का प्रभाव कच्ची सामग्री से जिंक आक्साइड को प्राप्त करने की दर पर पड़ता है लेकिन इसका प्रभाव तैयार जिंक आक्साइड की गुणवत्ता पर नहीं पड़ता है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत को निर्यात की गई सामान वस्तु के लिए पुनर्निर्मित सामग्री की घरेलू बिक्री कीमत की तुलना जब आकलित उत्पादन लागत से की जाती है तब यह इंगित होता है कि घरेलू बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं की गई हैं । प्राधिकारी निर्णय लेते हैं कि इससे भी प्राधिकारी के उस निष्कर्ष को समर्थन मिलता है कि घरेलू बाजार में बेची गई वस्तुएं तथा भारत को निर्यात की गई वस्तुएं तुलनीय नहीं हैं । निर्यातक ने यह भी निवेदन किया है कि बेची गई घरेलू सामग्री की गुणवत्ता घटिया थी । जहां तक निर्यातक के इस निवेदन का संबंध है कि भारत के घरेलू उद्योग द्वारा भी पुनर्निर्मित सामग्री से इस वस्तु का विनिर्माण किया जाता है, प्राधिकारी यह निर्णय लेते हैं कि पाटन तथा क्षति के मार्जिन की तुलना तुलनीय उत्पादों के संबंध में की गई है और यह कि देश के कुल घरेलू उत्पादन से पुनर्निर्मित सामग्री को अलग रखने से याचिकाकर्ता की हैसियत में सुधार ही होगा । इसलिए प्राधिकारी इन परिस्थितियों में धारा

9क(1)(ग) तथा मै0 हलदर एंड टॉपसू के मामले में लिए गए निर्णय का स्मरण करते हैं और इन दोनों का संदर्भ लेना उचित समझते हैं ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि धारा 9क(1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य से व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु के लिए उप-धारा (6) के तहत बने नियमों के अनुसार यथा निर्धारित तुलनीय कीमत तब इंगित होती है जब यह निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में खपत के लिए आशयित हो ।

इस संबंध में प्राधिकारी मै0 हलदर एंड टॉपसू (डेनमार्क से कैटलिस्ट का निर्यात) के मामले में मानीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्मरण करते हैं । प्राधिकारी ने नेपाल के उस अन्य उत्पादक/निर्यातक की समान वस्तु की प्रतिनिधिक घरेलू बिक्री कीमत का संदर्भ लिया है जो जांच अवधि (पीओआई) सहित पिछले कुछ समय से घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री पर्याप्त मात्रा में करता आ रहा है । प्राधिकारी ने नेपाल के अन्य उत्पादक/निर्यातक के सामान्य मूल्य का संदर्भ इस निर्यातक के लिए भी प्रतिनिधिक सामान्य मूल्य के रूप में लिया है ।

सामान्य मूल्य *** डालर/मी.टन बैठता है ।

प्राधिकारी ने कारखाना द्वारा निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए निर्यात कर, मूलता प्रमाण पत्र संबंधी प्रभार, ऋण लागत, शुल्क वापसी तथा बैंक गारंटी कमीशन के कारण एफओबी से क्रमशः ***, ***, *** तथा *** डालर/मी.टन तक के समायजनों पर विचार किया है ।

कारखाना द्वारा निर्यात कीमत *** डालर/मी.टन मानी गई है ।

5. मै0 स्वास्तिक मेटल इंडस्ट्रीज, बिराट नगर, नेपाल

प्राधिकारी नाट करते हैं कि निर्यातक न सबद्ध वस्तु घरेलू बाजार में बेची है, जो कि पर्याप्त मात्रा में नहीं है। इसलिए प्राधिकारी ने इन घरेलू बिक्रियों को पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण अनदेखा कर दिया है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने प्रकटन विवरण के जवाब में यह उल्लेख किया है कि मै0 पशुपति ऑक्साइड उद्योग की घरेलू बिक्रियां उनके द्वारा की गयी बिक्री से तुलनीय नहीं हैं और इसलिए पाटन मार्जिन की गणना करने के लिए उत्पादन की लागत का अपनाना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसा कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है कि क्यों ये दोनों बिक्रियाँ समान नहीं हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि यदि गुणवत्ता समायोजन के संबंध में अगर कोई मुद्दा है तो उसकी भी मात्रा नहीं बतलाई गयी है। इस संबंध में प्राधिकारी मै0 हलदोर एंड टोपसो (इनमार्क से कैटेलिस्ट का निर्यात) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का हवाला देते हैं। प्राधिकारी ने नेपाल में अन्य उत्पादक/निर्यातक की समान वस्तु की घरेलू बिक्री की प्रतिनिधि कीमत का उल्लेख किया है जो घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री जांच अवधि सहित पिछले कुछ समय से पर्याप्त मात्रा में करते रहें हैं। प्राधिकारी ने इस निर्यातक के लिए भी प्रतिनिधिक सामान्य मूल्य के रूप में नेपाल में अन्य उत्पादक/निर्यातक के सामान्य मूल्य को संदर्भित किया है।

सामान्य मूल्य *** डालर/मी.टन बनता है।

प्राधिकारी ने कारखानागत निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए निर्यात कर, मूलता-प्रमाण पत्र संबंधी प्रभार, ऋण लागत, शुल्क वापसी और बैंक गारंटी कमीशन के लिए क्रमशः XXXX, XXXX, XXXX, XXXX और XXXX डालर/मी.टन तक एफ ओ बी से समायोजनों पर विचार किया है।

कारखानागत निर्यात कीमत XXXX डालर/मी.टन मानी गयी है।

6. मै0 पशुपति मेटल इंडस्ट्रीज, बिराट नगर, नेपाल

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने घरेलू बाजार में विभिन्न ग्रेड और गुणवत्ता (द्वितीय गुणवत्ता) वाली संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वस्तु की गुणवत्ता घरेलू और निर्यात बाजार में पूरी तरह भिन्न है, प्राधिकारी जांच अवधि के दौरान घटिया गुणवत्ता वाली संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत को अनदेखा करने का प्रस्ताव करते हैं क्योंकि व भारत में निर्यातित वस्तु के समान वस्तु नहीं हैं।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रकटन विवरण के जवाब में निर्यातक ने अनुरोध किया है कि मै0 पशुपति ऑक्साइड उद्योग द्वारा बेची गयी वस्तुएं उत्तम गुणवत्ता की हैं और इसलिए उनके लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उन पर विचार नहीं किया जा सकता। इस संबंध में प्राधिकारी नाट

करते हैं कि निर्यातक ने किसी गुणवत्ता समायोजन के लिए कोई परिमाण उपलब्ध नहीं कराया है और इसके अतिरिक्त पहले अपने जवाब में उन्होंने यह उल्लेख किया कि उनकी वस्तु घटिया क्वालिटी की है। इसलिए प्राधिकारी विचार करते हैं कि नेपाल में संबद्ध वस्तु की प्रतिनिधिक घरेलू बिक्री कीमत को नेपाल में अन्य निर्यातको/उत्पादको द्वारा बेची गयी उक्त संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमतों के आधार पर लेने की आवश्यकता है।

इस संबंध में प्राधिकारी मै0 हलदोर एड टोपसो (डेनमार्क से कैटेलिस्ट का निर्यात) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का हवाला देते हैं। प्राधिकारी ने नेपाल में अन्य उत्पादक/निर्यातक की समान वस्तु की घरेलू बिक्री की प्रतिनिधि कीमत का उल्लेख किया है जो घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री जांच अवधि सहित पिछले कुछ समय से पर्याप्त मात्रा में कर रहे हैं। प्राधिकारी ने इस निर्यातक के लिए भी प्रतिनिधिक सामान्य मूल्य के रूप में नेपाल में अन्य उत्पादक/निर्यातक के सामान्य मूल्य को सदर्भित किया है।

सामान्य मूल्य *** डालर/मी.टन बनता है।

प्राधिकारी ने कारखानागत निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए निर्यात कर, मूलता प्रमाण पत्र संबंधी प्रभार ऋण लागत, शुल्क वापसी और बैंक गारंटी कमीशन के लिए क्रमशः XXXX, XXXX, XXXX, XXXX और XXXX डालर/मी.टन तक एफ आ बी स समायोजनों पर विचार किया है।

कारखानागत निर्यात कीमत XXXX डालर/मी.टन मानी गयी है।

5. पाटन - सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना

तुलना से संबंधित नियमों में नियमानुसार व्यवस्था है।

"डम्पिंग का मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के इसी स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथा संभव उसी समयावधि के दौरान की गयी बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी अंतर में शामिल हैं बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं वास्तविक विशेषताएं तथा अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता का प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।"

प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के मूल्यांकन के लिए भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना भारत औसत कारखाना-गत निर्यात कीमत से की है।

संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु के उत्पादक/निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार है:

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य (डालर/मी टन)	सामान्य मूल्य (डालर/मी टन)	निर्यात कीमत (डालर/मी टन)	पाटन मार्जिन (%)
नेपाल				
1 मै0 पशुपति ऑक्साइड उद्योग लि0, सोनापुर, नेपाल	*****	*****	*****	15 1
2 मै0 एशियन मेटल्स बीरगज, नेपाल	*****	*****	*****	22
3 मै श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा0) लि0, काठमाडू	*****	*****	*****	20 05
4 मै0 उन्नत इडस्ट्रीज (प्रा0) लि0, दुहाबी	*****	*****	*****	12 16
5 मै0 स्वास्तिक मेटल इडस्ट्रीज, बिराट नगर	*****	*****	*****	17 03
6 मै0 पशुपति मेटल इडस्ट्रीज, बिराट नगर नेपाल	*****	*****	*****	23 2
7 अन्य उत्पादक/निर्यातक	*****	*****	*****	23 2

नेपाल के सबद्ध वस्तु के निर्यातको के लिए अधिकतम पाटन मार्जिन लिया गया है और उच्चतम पाटनरोधी शुल्को की सिफारिश की गयी है जैसा कि उक्त पैरा में देखा जा सकता है ।

6. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

उपरोक्त नियम 11 अनुबध-11 क तहत जब क्षति के बार में किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में " पाटित आयातो की मात्रा

घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा।" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गयी होती।

भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए हम उक्त नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसरण में ऐसे संकेतकों पर विचार कर सकते हैं जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं -

क. घरेलू उद्योग

- (i) यह उद्योग देश में जिक ऑक्साइड के पाटन से ग्रस्त है। इस उद्योग द्वारा विभिन्न सरकारी विभागों और इस महानिदेशालय के साथ आदान-प्रदान किए गए पत्र इस बात का प्रमाण हैं।
- (ii) संबद्ध वस्तु की मांग में गिरावट नहीं आई है। तथापि, जिक ऑक्साइड की मांग में आयातों के बाजार हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है।
- (iii) यद्यपि उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में पाटित आयातों के कारण जिक कीमतों के प्रतिशत के रूप में गिरावट आई है।
- (iv) पाटित आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत और क्षति रहित कीमत से काफी कम है, जिससे भारतीय बाजार में भारी कीमत कटौती/गिरावट हो रही है।
- (v) आयातित माल का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से पर्याप्त रूप से कम है जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में भारी कीमत कटौती हुई है।
- (vi) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी कमी आई है।

- (vii) निर्यात कीमत में रुपये और यू एस डालर दोनों के रूप में गिरावट आई है ।
- (viii) अधिकांश विनिर्माण एकको न पाटित आयातों के कारण या तो अपना उत्पादन स्थगित कर दिया है अथवा अपना प्रचालन पूरी तरह बदल दिया है ।
- (ix) घरेलू उद्योगों के उत्पादन की लागत में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है । तथापि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों में आनुपातिक रूप से वृद्धि नहीं कर सका है जिससे घरेलू उद्योगों का वित्तीय हानि हुई है ।
- (x) अंतिम शुल्कों की सिफारिश यू एस डालर के रूप में की जाए ताकि विनिमय दर में उतार-चढ़ाव के कारण संरक्षण में कोई कटौती न हो ।

प्रकटन के उपरान्त, निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं -

परिवर्तनीय आधार पर अंतिम शुल्कों की सिफारिश करने के लिए हम प्राधिकारी के आभारी हैं । यह अनुरोध किया गया है कि अंतिम शुल्कों की सिफारिश भी यू एस डालर (निर्धारित राशि) के रूप में की जाए ताकि विनिमय दर में परिवर्तन के कारण संरक्षण की मात्रा में कटौती न हो ।

ख. निर्यातक

- (i) भारत-नेपाल संधि के संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों में दिया गया अभिमत भारत संधि बनाम कामलक्ष्मी फाइनेंस कारपोरेशन लि० और हैदराबाद इंडस्ट्रीज लि० के मामले में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विपरीत है और भारत के संविधान के अनुच्छेद 141 के उल्लंघन में है ।
- (ii) चीन से हुए निर्यात नेपाल की कीमतों से काफी कम कीमतों पर हुए हैं और भारत को निर्यात की गयी मात्राएं भी महत्वपूर्ण रूप से अधिक हैं । इसलिए क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच चीन के निर्यातकों और नेपाल के निर्यातकों के मामले में अलग से करने की आवश्यकता है । इस मामले में क्षति का सचयी मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए ।

- (iii) मै0 पशुपति ऑक्साइड उद्योग न यह उल्लेख किया है कि नेपाल में छ विनिर्माताओं का भारतीय बाजार में 4 - 5 प्रतिशत के लाभ मार्जिन पर 4 - 5 प्रतिशत का हिस्सा है और इससे भारत में 175 इकाईयाँ बढ़ नहीं हो सकती हैं। घरेलू उद्योग का क्षति चीन से आयातों के कारण हुई है न कि नेपाल से। मै0 पशुपति ऑक्साइड न यह उल्लेख किया है कि भारत-नेपाल संधि ने नेपाली निर्यातकों को फायदा पहुँचाया है जो कि केवल भारत सरकार द्वारा दिया गया है।

प्रकटन विवरण के पश्चात निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं -

यह उल्लेख किया जाता है कि भारत-नेपाल संधि में पाटनरोधी प्रावधान की प्रयोज्यता शामिल नहीं है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि भारतीय उद्योग को क्षति यदि कोई हुई हो वह चीन से हुए आयातों के कारण हुई है और न कि नेपाल से हुए आयातों के कारण। यह भी उल्लेख किया जाता है कि क्षति यदि कोई हुई हो तथा नेपाल से हुए आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। नेपाल के निर्यातकों को प्रतिस्पर्धी लाभ संधि के तहत उपलब्ध शुल्क लाभ के कारण मिलते हैं। निर्यातकों के पास शुल्क मुक्त कच्चे माल के लिए पहुँच उपलब्ध थी और उन्हें जाच की अवधि के दौरान मूल शुल्क तथा एस ए डी के भुगतान के बगैर भारत को निर्यात करने की सुविधा प्राप्त थी। ये लाभ भारत तथा नेपाल की सरकार की नीतियों के कारण हुए थे। कारणात्मक संबंध की जाच करते समय संधि के प्रभाव की जाच करने की आवश्यकता है। कम लागत तथा उसके परिणामस्वरूप नेपाल में निर्यातकों की बेहतर कीमते होना पाटन से उत्पन्न होने वाली घटना न होकर टैरिफों से उत्पन्न हुई घटना है। कारणात्मक संबंध के अभाव में नेपाल के निर्यातकों के विरुद्ध किसी शुल्क की सिफारिश नहीं की जा सकती है।

प्राधिकारी उपरोक्त अनुरोधों पर विचार करने के पश्चात घरेलू उद्योग तथा पाटन संबंध वस्तुओं के संबंध में निम्नलिखित आर्थिक मानदण्डों को नोट करते हैं -

- (i) 1997-98 में नेपाल से संबंध वस्तुओं के आयात 257 मी टन के हुए थे और 1998-99 में आगे और बढ़कर 1244 मी टन तथा जाच की अवधि में आगे बढ़कर 4211 मी टन के हो गए हैं। संबंध वस्तुओं के कुल आयातों में नेपाल से संबंध वस्तुओं के आयातों का हिस्सा 1997-98 में 8.2 प्रतिशत से बढ़कर 1998-99 में 18.9 प्रतिशत तथा जाच की अवधि में 35.34 प्रतिशत हो गया है।
- (ii) वर्ष 1997-98, 1998-99, 1999-2000 तथा जाच की अवधि के लिए क्षमता उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्रिया और बिक्री कीमतें निम्नानुसार हैं -

	1997-98	1998-99	1.4.99 से 30.9.2000 (जांच की अवधि)	जांच की अवधि वार्षिक
उत्पादन (मी.टन)	8637	9504	15237	10158
क्षमता उपयोग	71.97 %	79.25	84.65 %	84.65 %
घरेलू बिक्रियाँ (मी.टन)	6450	6702	11097	7398
बिक्री कीमते (रु०/मी.टन)	55568	53014	59102	59102

- (iii) 1997-98 में सबद्ध वस्तुओं के लिए घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 14.6 प्रतिशत था जो कि जाच की अवधि में बढ़कर 15.6 प्रतिशत हो गया ।
- (iv) जाच की अवधि के दौरान सबद्ध वस्तुओं की कुल माग लगभग 45000 मी.टन (वार्षिक) रही है । पिछले वर्षों में माग में गिरावट नहीं आई है और इसलिए माग, घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाने वाला कारक नहीं है ।

इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग द्वारा सबद्ध वस्तुओं की उत्पादन प्रक्रिया में किसी कमी को कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाने वाला कारक हो सकता है, के प्रभाव को दूर करने के लिए प्राधिकारी ने जाच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत (एन आई पी) का निर्धारण किया है । क्षतिरहित कीमत का निर्धारण जाच की अवधि में घरेलू उद्योग के लिए विभिन्न विनिर्माण इकाईयों अर्थात् कच्चा माल, उपयोग तथा उपभोग्य पदार्थ इत्यादि के सर्वोत्तम उपयोग एवं खपत संबंधी मानदण्डों के सामान्यीकरण एवं बेंचमार्किंग द्वारा किया गया है ।

- (v) पाटित सबद्ध वस्तुओं के कम पहुँच मूल्य से जाच अवधि में कीमत ह्रास और कीमत कटौती हुई है । जाच की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा जिक्र ऑक्साइड की निवल बिक्री प्राप्ति (एन एस आर) जाच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत (एन आई पी) से कम रही है । इसके अलावा पाटित आयातों द्वारा कीमत में कटौती होने के कारण घरेलू उद्योग ने कुछेक उपभोक्ता खो दिए हैं ।
- (vi) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि नेपाल के निर्यातकों ने यह उल्लेख किया है कि भारत-नेपाल संधि के अंतर्गत पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाए जा सकते हैं । निर्यातकों ने भारत सरकार बनाम कमलाक्षी वित्त निगम लि० तथा हैदराबाद इंडस्ट्रीज लिमिटेड के मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्णय का भी उल्लेख किया है जिसमें पाटनरोधी शुल्क का सीमाशुल्क के रूप में मानने का निर्णय दिया गया है । प्राधिकारी दिनांक 6.8.2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों में दिए गए अभिमतों का पुनः स्मरण भी करते हैं जिसमें यह निर्णय दिया गया था कि 'पाटनरोधी शुल्क की लेवी डब्ल्यू टी ओ नियमों के अंतर्गत निर्धारित उपचारात्मक उपाय होने के

कारण मुख्यतः उन देशों से निर्यात करने वाले निर्यातक तक सीमित होती है जिनकी पाटन की दृष्टि से जांच की जा रही है। पाटनरोधी शुल्क केवल उन निर्यातकों पर लगाया गया है जिन्होंने पाटन किया है और इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाई है। अतः पाटनरोधी शुल्क की लेवी कोई सामान्य शुल्क नहीं है बल्कि पाटन द्वारा हुई क्षति को दूर करने के लिए एक उपचारात्मक उपाय है।" इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी नेपाल से एकीलिक यार्न के आयातों के संबंध में दिनांक 25.9.2001 के प्रारंभिक निर्धारण में उल्लिखित जांच परिणामों का स्मरण करते हैं जिसमें पैरा ट (33) में प्राधिकारी ने यह अभिमत दिया था कि

"यद्यपि यह मान लिया जाए कि पाटनरोधी शुल्क एक प्रकार का सीमाशुल्क है तो भी वह नेपाल से हुए आयातों पर प्रभावी है क्योंकि भारत-नेपाल संधि में नेपाल से होने वाले आयातों पर किसी प्रकार का सीमाशुल्क (अथवा विशिष्टतः पाटनरोधी शुल्क) लगाए जाने से खुली छूट प्रदान करने की व्यवस्था नहीं है।" अतः प्राधिकारी यह निर्णय देते हैं कि चूंकि भारत-नेपाल संधि के अंतर्गत नेपाल से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क न लगाने से संबंधित कोई खुली छूट उपलब्ध नहीं है इसलिए प्राधिकारी यह नाट करते हैं कि पाटन के कारण हुई किसी भी क्षति को पाटनरोधी शुल्कों के प्रावधानों के अनुसार पाटनरोधी शुल्कों के तंत्र के जरिए समुचित ढंग से दूर करने की आवश्यकता है।

प्राधिकारी, नेपाल के निर्यातकों द्वारा भारत-नेपाल संधि के अंतर्गत उन्हें उपलब्ध शुल्क छूट के बारे में किए गए विभिन्न अनुरोधों तथा इसके घरेलू उद्योग पर क्षति के प्रभाव के निर्धारण को भी नाट करते हैं। प्राधिकारी का यह मानना है कि कम कीमत पर पाटित आयातों के कारण कीमत कटौती की सीमा का निर्धारण क्षति मार्जिन का निर्धारण करने की सुसंगत प्रक्रिया के अनुसार किया गया है।

इसके अलावा, मै0 हाल्डोर एड टोपसा, के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने भी दिनांक 20.7.2000 के अपने आदेश में पाटनरोधी शुल्कों के औचित्य का बरकरार रखा है क्योंकि संबद्ध वस्तुओं पर सीमाशुल्क की दो दरें प्रचलित थीं।

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारत-नेपाल संधि के अंतर्गत ऐसी ही स्थिति मौजूद है जहाँ पर भी हालांकि कुछेक सीमाशुल्कों से छूट प्राप्त है तो भी कीमत ह्रास और क्षति मार्जिन का निर्धारण लागू सीमाशुल्कों के अनुसार किया जाना है, जैसी कि मै0 हाल्डोर एड टोपसा के मामले में दिए गए निर्णय में उच्चतम न्यायालय द्वारा पुष्टि भी की गयी है।

इसके अलावा, प्राधिकारी यह नाट करते हैं कि यह प्रमाणित हो चुका है कि संबद्ध देश के निर्यातक उक्त संबद्ध वस्तुओं का पाटन कर रहे हैं। पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य केवल ऐसी निर्यात कीमत का पाटनरहित अथवा क्षति रहित स्तर तक लाना है।

पाटनरोधी शुल्क द्वारा संशोधित ऐसी निर्यात कीमतें भारत-नेपाल संधि के अंतर्गत विद्यमान शुल्क छूट के लाभ उठाती रहेंगी ।

7. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

प्राधिकारी यह मानते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को नुकसान हो रहा है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जो कि देश के सामान्य हित में है ।

प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि हालांकि पाटनरोधी शुल्क लगाने से उन उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं जो संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित/उत्पादित किए जा सकते हैं और इसके परिणामस्वरूप इसका इन उत्पादों की संगत प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, तथापि भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को पाटनरोधी उपायों से रोका जा सकगा घरेलू उद्योग का ह्रास रूकेगा और इससे संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे । पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देश से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित भी नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा ।

पहुँच मूल्य

संबद्ध वस्तु के लिए पहुँच मूल्य का निर्धारण भारत सी आई एफ निर्यात कीमत में (धारा 3.3 क, 8 ख, 9 तथा 9 क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर) सभी प्रकार के लागू सीमाशुल्क और 1 प्रतिशत उतराई प्रभार जोड़ने के बाद किया गया है ।

घ. निष्कर्ष

- पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि
- क. संबद्ध देश के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित सभी स्वरूपों में संबद्ध वस्तुओं का इसके सामान्य मूल्य में कम कीमत पर भारत को निर्यात किया गया है ।
 - ख. घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से पाटित संबद्ध वस्तुओं की कम पहुँच कीमतों द्वारा हुए कीमत ह्रास के कारण हुई कम निवल बिक्री प्राप्ति (एन एस आर) के जरिए वास्तविक क्षति हुई है जिससे वित्तीय घाटा हुआ है ।
 - ग. संबद्ध देश के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटन द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । प्राधिकारी, संबद्ध देश के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के सभी स्वरूपों/ग्रेडों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं । किसी अन्य ग्रेड/शुद्धता के जिन ऑक्साइड जिसका यदि किसी अन्य शीर्ष अर्थात् 38123001

और 28179000 के तहत आयात किया जाता है तो उन पर भी पाटनरोधी शुल्क लागू होंगे ।

- घ. पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का निर्णय लिया गया था ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त किया जा सके । तदनुसार यह प्रस्ताव किया गया है कि सीमाशुल्क टैरिफ के सीमाशुल्क उपशीर्ष 2817.0001 के अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाले नेपाल के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी ग्रेडो पर केन्द्रीय सरकार द्वारा नीचे कालम 3 में यथा उल्लिखित राशि तथा पहुँच कीमत के बीच अंतर के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

क्र.सं.	निर्यातक/उत्पादक का नाम	राशि (अमरीकी डालर/मी.टन)
1.	मै0 पशुपति ऑक्साइड उद्योग लि0, सोनापुर, नेपाल	1377.25
2	मै0 एशियन मेटल्स, बीरगंज, नेपाल	1372.11
3.	मै श्री पशुपति रासायनिक उद्योग (प्रा0) लि0, काठमांडू	1413.60
4.	मै0 उन्नत इंडस्ट्रीज (प्रा0) लि0, दुहाबी	1413.60
5.	मै0 स्वास्तिक मेटल इंडस्ट्रीज, विराट नगर	1385.94
6	मै0 पशुपति मेटल इंडस्ट्रीज, विराट नगर, नेपाल	1390.42
7	अन्य उत्पादक/निर्यातक	1413.60

उपरोक्त के अधीन प्राधिकारी दिनांक 6.8.2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं ।

इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकती ।

एल. बी. मण्नाग्रहि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES

NOTIFICATION
New Delhi, the 18th March, 2002
FINAL FINDINGS

Subject : Anti-Dumping investigation concerning imports of Zinc Oxide from Nepal

No. 7/1/2001-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of anti-dumping duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof :

A PROCEDURE

The procedure described below has been followed:

- i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from the M/s Transpek Industries Ltd. (TIL) having registered office at Kalali Road, Atladra Road, Vadodara, Gujarat and M/s Demosha Chemicals Ltd. having registered office at 105A, Mittal Towers, 210, Nariman Point, Mumbai-400021 with its associate company M/s Western India Ltd. (hereinafter also referred to as petitioner) on behalf of domestic industry, alleging dumping of Zinc Oxide (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from Peoples Republic of Nepal (hereinafter referred to as subject country). The petition is also supported by M/s All India Zinc Oxide Manufactures Association. Subsequent to initiation M/s J G Chemicals, Kolkata, M/s Synotex, Kolkata, M/s Pragati Chemicals, Mumbai, M/s R.S. Chemicals, Kolkata, M/s Western India Chemicals, Mumbai, M/s Gem Techno Chem, Jaipur and M/s Metalco Pvt. India Ltd., New Delhi have also supported the petition.
- (ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.

- (iii) The Authority on the basis of prima-facie evidence as received decided to initiate the investigation against imports of subject goods from Nepal. The Authority notified the Embassy of Nepal in New Delhi about the receipt of the dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules.
- (iv) The Authority issued a public notice dated 19.3.2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under Custom Code 2817.0001 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Nepal.
- (v) The Authority notified preliminary findings dated 6.8.2001 and forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days of the date of the letter.
- (vi) The Authority also forwarded a copy of the preliminary findings to the Embassy of the subject country in New Delhi with a request that the exporters of subject goods and other interested parties may be advised to furnish their views on the preliminary findings in the time frame as stipulated in (v) above.
- (vii) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2).
- (viii) Responses/information was filed by the following interested parties during the investigation:-
 - 1. M/s All India Zinc Oxide Manufacturers Association, New Delhi
 - 2. M/s ATMA, New Delhi
 - 3. M/s Northern India Chemicals Limited, Chandigarh
 - 4. M/s Pashupati Oxide Udyog Limited, Sonapur, Nepal
 - 5. M/s Asian Metals, Birganj, Nepal
 - 6. M/s Shree Pashupati Rasayanik Udyog (P) Ltd. Kathmandu, Nepal
 - 7. M/s Unnat Industries (P) Ltd. Duhabi, nepal
 - 8. M/s Swastic Metal Industries, Birat Nagar, Nepal
 - 9. M/s Pashupati Metal Industries, Birat Nagar, Nepal
- (ix) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 22.11.2001. All parties presenting /views were requested to file written submissions of the views expressed. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;

- (x) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request;
- (xi) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.
- (xii) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties subsequently have been appropriately dealt in the preliminary findings and/or these findings;
- (xiii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 1.3.2002 and comments received on the same have also been duly considered in these findings.
- (xiv) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- (xv) The period of investigation (POI) considered is 1.4.1999 to 30.9.2000

B. VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES & EXAMINATION BY AUTHORITY

The views expressed by various interested parties have been discussed in the preliminary findings and also in the disclosure statement. The views which have not been discussed earlier in the preliminary findings and disclosure statement and those now raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paras herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paras herein below.

C.1 PRODUCT UNDER CONSIDERATION

None of the interested parties has made any submission on the issue of product under consideration.

EXAMINATION BY AUTHORITY

The Authority notes that none of interested parties has made any submissions on the product under consideration. The Authority therefore confirms the Product Under Consideration as held in the preliminary finding in para C.1

The Authority reiterates that the product under consideration is Zinc Oxide a white/off white powder with chemical formula ZnO , produced in various grades viz. regular grade (99%), IP Grade (99%), Feed Grade etc. The product is classified under Custom Tariff Head 2817.0001. The product is used in manufacture of automobile tyres and other rubber goods, manufacture of high purity Zinc chemicals such as sulphate, chloride etc. and is used as an input for ceramic industry and as a supplement in animal feed formulations. Zinc Oxide is reserved for production in the small-scale sector.

The product is importable under Open General Licence (OGL) and attracts a basic duty of 35%. The present investigation covers all grades of Zinc Oxide.

2. STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY:

A. DOMESTIC INDUSTRY

In response to the Disclosure Statement, the domestic industry has reiterated their submissions on the issue of standing viz. the total zinc oxide consumption derived from the data on zinc consumption and rubber production.

B. EXPORTERS

The following submissions have been made:-

- (i) We have given several lists of manufacturers outside the Association whose production may be ascertained to examine the issue of standing. The calculation of total production of zinc oxide by input method is faulty due to various factors. Zinc oxide is produced from zinc dross, zinc hydroxide and zinc ash. No account has been taken of the imports of zinc dross, zinc hydroxide and zinc ash in the calculation. The figures given for zinc dross are totally incorrect. The DGCI&S and other sources of information do not reflect the full volume of imports. The adjustments may be made on an analysis of zinc oxide imports from Nepal as reflected in the DGCI&S data as regards the zinc oxide exporters as per our responses.
- (ii) The All India Zinc Oxide Manufacturers Association should be excluded for the purpose of determining standing.
- (iii) The secondary sources for determining standing should be looked into only when direct information is not available. It is submitted that as per the Association of Zinc Oxide Manufacturers there are 125 units functioning in the POI. Around 47 of these are members of Association. We have given names of around another 40 odd units. Therefore data of a majority of the units can be found out from the units themselves.
- (iv) The Association of Zinc Oxide Manufacturers on the one hand are claiming that there are 300 units producing 600000 lakhs tons to CIL. They have made another

representation indicating that there are 125 units producing 300000 tons. Whether the figure of 600000 lakhs tons or 300000 lakhs tons is taken, the petitioners will not have the standing. The claim of the petitioners on the total production of 40000 tons is totally incorrect and that the correct figure should be around 75000 tons.

In response to the Disclosure Statement, the exporters/producers have mentioned that :-

- (i) Standing of the petitioners as domestic industry is a pre-requisite for initiation. It is submitted that the All India Zinc Oxide Manufactures Association has itself provided certain information regarding the production of zinc oxide in India to the CII. It is submitted that this information should form the basis for determination of the total domestic production. With this data, the petitioners would have no standing as domestic industry.
- (ii) The calculation of total domestic production as proposed in the disclosure is not based on any evidence. The total zinc consumption in India has been determined and it is assumed that some percentage of this relates to zinc oxide. The entire working is based on a theoretical assumption regarding share of zinc oxide in total consumption. In the absence of any data on this aspect, the determination of total domestic production is factually erroneous.
- (iii) The petition is maintainable for lack of standing. As regards, the reliance on the findings dated 5.10.2001, it is submitted that the exporters were not a party to those proceedings, and therefore, in the interests of justice, the standing may be considered on the basis of the evidence on records in the present case.

EXAMINATION BY AUTHORITY

The Authority notes the various submissions made by the exporters/producers in response to the preliminary findings, public hearing and the disclosure statement.

The Authority notes that the product under consideration is manufactured by the small-scale industry. Though All India Zinc Manufacturing Association has provided details of zinc oxide production in the country, it had come to the notice of the Authority that the total number of producers of zinc oxide in the country is more than the producers as indicated by All India Zinc Manufacturing Association. The Authority has received details on actual production from some Directorate of industries, in certain states. The Authority notes that M/s ATMA has indicated that the total production of zinc oxide in the country is 65,000 MT and 40% is consumed by the tyre industry. ATMA has also indicated the quantity of rubber consumed by the tyre industry. The Authority notes that this also correlates with the data published by Indian Rubber Journal regarding consumption of rubber by the tyre industry. Keeping in view the fact that the data of all SSI producers may not be exhaustively available, the Authority has constructed production of zinc oxide by indirect method. The Authority also notes the submissions

that zinc oxide can be produced from zinc metal, zinc hydroxide, zinc dross and zinc ash. The Authority on the basis of production norms of these four raw materials has constructed the total domestic production of zinc oxide in the country.

The Authority noted after interactions with the domestic industry and India Zinc Lead Development Association that there are two major producers of zinc in the country. These are M/s Hindustan Zinc Ltd. and M/s Binani Zinc Ltd. The authority gathered information on the zinc production by these producers from the India Zinc Lead Development Association and also from these two producers directly. The Authority also examined the consumption pattern of zinc in various sectors like rubber, chemicals, automotive sector etc. The authority on the basis of the response received from the India Zinc Lead Development Association and also directly from the two zinc producers noted that the total zinc production in the POI by M/s Hindustan Zinc Ltd. was 145796 MTs and by M/s Binani Zinc Ltd. was 29161 MTs. The two producers sold 3706 MT and 3797 MT respectively to the Zinc Oxide Manufacturers in the country. The consumption pattern indicated that 4.28% of the zinc produced in the country was being used by the Zinc Oxide manufacturers. The same consumption pattern norm has been applied on the zinc imported during POI as per the data of DGCI&S. The proportion of imported zinc consumed in the zinc oxide manufacturing sector came to 2660 MT. The India Zinc Lead Development Association indicated that 175000 MT equivalent to 70-75% of the total zinc production is consumed in the galvanizing sector. Out of this 10 to 15% is recovered as zinc dross. The Authority has referenced the higher benchmark i.e. 15% for evaluating the availability of zinc dross through this route. The zinc dross thus made available though the galvanized route comes to 26250 MTs. The zinc dross imports during POI as per the secondary source Minerals and Metals Review (MMR) review is 1157 MT. The Authority notes that as per the technical consumption norms (also correlated with norms of advance license under EXIM Policy) 850 MT of zinc gives 1000 MT of zinc oxide while 900 MT of zinc dross gives 1000 MT of zinc oxide. The Authority notes that as regards zinc hydroxide it is an intermediate stage of zinc oxide production from the prime zinc route and that there are no zinc hydroxide imports made during the POI. Zinc ash is available from the zinc scrap waste route. The total imports of zinc scrap during 1999-2000 is 45479 MT. Considering all of the scrap as usable for conversion to zinc oxide, on the basis of end use pattern of zinc and recovery ratio of 0.85, the total zinc oxide produced from zinc ash/zinc scrap route comes to 915 MT. The total zinc oxide production therefore, on the basis of the above sources of zinc as indicated above come to 41192 MTs. It has been presumed that all the zinc dross imported from the galvanizing sector goes into the production of the zinc oxide only. By removing the production of those producers who have imported zinc oxide from Nepal in POI as per Rule 2(b), the total eligible domestic production comes to 32942 MT. The domestic industry's share in domestic production as per this comes to 31.7%.

As per the consumption of zinc oxide in the rubber industry, the Authority notes that the petitioners sell more than 95% of their production of zinc oxide to the rubber industry. The Authority notes that as per the response of ATMA, the total consumption of zinc oxide in tyre industry is 25000 MT while rubber consumption in the tyre sector is 408400 MT. Since the two data do not correlate if 2% usage norms of zinc oxide in tyre

sector is applied, the Authority on the basis of the utilisation ratio of 40% consumption of zinc oxide by tyre industry as indicated by ATMA, usage of 2% of zinc in the rubber industry which is indicated under the input output norms available for advance license in the EXIM Policy and total consumption of rubber in 1999-2000, notes that the total production of zinc oxide in 1999-2000 comes to 20420 MT which also upholds the standing of the petitioner.

The Authority holds that keeping in view the specific nature of the zinc oxide industry which is dispersed in the SSI sector, the construction method of zinc oxide production on an input or an output route is logical, scientific and reliable.

The Authority in view of the above holds that the petitioners satisfy the standing to file the petition as per rule 5(a) and 5(b) and represents the domestic industry as per rule 2(b). The Authority recalls and confirms Para C(1) of the preliminary finding of Zinc Oxide from Nepal dated 6.8.2001.

3 LIKE ARTICLE

The Authority notes that there are no submissions made on this issue by any of the interested parties and the Authority in this regard recalls Para C(2) of the Preliminary Findings of 6.8.2001 and reiterates that the subject goods as produced by the domestic industry and those exported from the subject country are technically and commercially substitutable in various end-use sectors and are used interchangeably. One of the interested parties have indicated that imported subject goods from the subject country are produced by different manufacturing process and since the domestic manufacturers have full capacity utilization implies that imported goods from the subject country are used in different sectors and are not Like Article to the goods produced in domestic market. The Authority also on the basis of information filed by various interested parties and as available from secondary source notes that the goods imported from the subject country and those domestically produced have been consumed by the common customers interchangeably.

The Authority in view of this, therefore, holds that the subject goods imported from the subject country and that manufactured by the domestic industry are Like Article within the meaning of the Rule 2(d) and confirms para C(2) of preliminary finding.

4. NORMAL VALUE & EXPORT PRICE

The following submissions have been made by various interested parties:-

A. DOMESTIC INDUSTRY

- (i) The exporters have not disclosed sufficient information in the non-confidential version.

- (ii) M/s Pashupati Oxide Udyog Limited, Nepal have suppressed excessive information and their response needs to be rejected. The cost of production of Zinc Oxide in Nepal cannot be lower than the cost of production in India.
- (iii) M/s Asian Metals have sold some inferior quality goods in domestic market and therefore we request Designated Authority to make adjustment of quality in determining the domestic selling price.
- (iv) The response filed by M/s Pashupati Metal Industries, Birat Nagar, Nepal needs to be disregarded and the normal value adopted for this exporter on the basis of M/s Pashupati Oxide Udyog is not correct being much lower and therefore the information provided by the domestic industry should be considered for determination of the normal value.
- (v) M/s Unnat Industries (P) Limited, Nepal have suppressed the information and therefore we are seriously handicapped in making our case. The company has talked about recycled material but has not bothered to clarify the issue.

Subsequent to the disclosure, the following submissions have been made:-

We fully support the determination of dumping margin in the disclosure statement

Even though the Designated Authority has already determined normal value in respect of those exporters who did not have viable domestic sales on the basis of other cooperating exporters, we reiterate that the decision of the Hon'ble Supreme Court is not only fully binding on the Designated authority but also quite unambiguous on this issue. Further it is the practice of the other investigating authorities also (in particular EU) that the sales of other responding exporters are considered for determination of normal value in respect of those exporters who did not have viable domestic sales in the investigation period.

We therefore request the Designated Authority to confirm the disclosure statement in this regard.

B EXPORTERS

- (i) M/s Swastic Metal Limited have indicated that their domestic sales are below 5% of the exports made to India and is not possible to make reasonable comparison between the domestic sales and export sales.
- (ii) M/s Swastic Metal Limited have also indicated that disallowance of adjustment on account of level of trade and type of customers is totally unjustified. They have also indicated that the quantities in two markets are different and therefore adjustment is called for.

- (iii) M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. have indicated that the comparison made on sales between M/s Gorakhali Rubber Udyog and M/s Balakram Vinod Kumar on account of quantity is not justified. It has been indicated that the domestic sale are on an average from a quantity ranging from 25 Kg to 3 MT against an export sales quantity of 40 MT. Therefore quantity discounts needs to be considered. M/s Pashupati Oxide Udyog have also indicated that the importers M/s Navbharat Metallic and M/s Fertichem India are making a profit of a range of ****% and therefore an adjustment on level of trade is called for.
- (iv) M/s Pashupati Metal Industries have indicated that in case their domestic sales are not acceptable, then manufacturing cost should be looked into on which high level of profits have been made.
- (v) M/s Pashupati Oxide Udyog have indicated that the criteria on cost of production for determination of normal value is most appropriate since the domestic market of Nepal is small and there are no exports from Nepal to any other country. This approach would not lead to any dumping.

Subsequent to the disclosure, the following submissions have been made:-

1. M/S PASHUPATI OXIDE UDYOG LIMITED, SONAPUR

- (i) Although the Authority accepts that the selling price policy of the exporter is based primarily on the service and quality, no adjustment has been given on this account. It is submitted that having accepted that the sales in the Nepal market were of a better quality of zinc oxide, appropriate adjustment should have been provided on account of this factors. The Authority has excluded domestic sales of other producers from consideration on the basis that they are of inferior quality and therefore not comparable. It is submitted that with the same parity of reasoning, superior quality zinc oxide sold in the local Nepal market cannot be said to be comparable. The verification by the officers of the Directorate was also carried out at the premises of the main customer, who confirmed that quality was an important issue in the fixation of price and the materials sold in the local Nepal market were of very high purity. In these circumstances reliance on the domestic sale price for determination of normal value is inconsistent and not in conformity with the law.
- (ii) It is submitted that the level of trade in the domestic and export market is quite different. The data clearly reveals that sales in the Nepal market are extremely small in comparison with the export sales to the Indian market. There are also two types of customers, actual users and traders. The fact that any customer, who purchases a large quantity, becomes eligible for a better price is common phenomenon in any market. The sale invoices indicate net prices inclusive of discounts. In view of the glaring different in the size of the sales, adjustments should be allowed.

- (iii) It is submitted that there is total absence of dumping.

2. M/S ASIAN METALS, BIRGANJ

- (i) It is submitted that since there are domestic sales by M/s Asian Metals, it is not permissible to determine normal value based on the domestic sales of another manufacturer. It is submitted that the product under consideration is zinc oxide. There is no further qualification as regards quality. As the sales in the domestic market by M/s Asian Metals are admittedly of zinc oxide, which is the product under investigation, they must form the basis for determination of normal value and not the sale price of some other manufacturer. The fact that these sales may have been of a different quality is at best an adjustment issue. It is submitted that appropriate adjustment may be made with reference to difference in quality, if required. The sales cannot be disregarded on the ground of quality. Moreover, there is nothing on record to suggest that the zinc oxide sold by M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. is of comparable quality to the exports made by M/s Asian Metals. This becomes all the more relevant, since the Authority itself accepts that the quality of the zinc oxide sold by M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. in the Nepal market is of a superior quality. It is submitted that the sales by M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. in the Nepal market are not comparable with the exports of M/s Asian Metals on account of quality, the adoption of their data for determination of normal value is unjustified.
- (ii) It is further submitted that the decision of the Hon'ble Supreme Court in the case of M/s Haldor Topsoe is not applicable to the facts of the present case. The Hon'ble Supreme Court has merely held that in the absence of domestic sales by the exporter, sales of other manufacturers in the said country or territory may be looked into. It is submitted that it is not the finding of the Court that the domestic sales of the exporter concerned can be rejected in preference to the sales of other manufacturers. Such an approach would be contrary to the aforesaid decision and Section 9A of the Customs Tariff Act. It is requested that the normal value may be determined on the basis of the domestic sales of Asian Metals or in the alternative on the cost of production.

3. M/S SHREE PASHUPATI RASAYANIK UDYOG(P) LTD.

It is submitted that the zinc oxide sold by M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. in the Nepal market is not comparable to the zinc oxide manufactured by M/s Shree Pashupati Rasaynik Udyog (P) Ltd. The quality of the zinc oxide manufactured and sold by M/s Pashupati Oxide in the home market is very superior and therefore commands a higher price. In fact, M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. is having a monopoly in the local Nepal market on account of the superior quality. In such circumstances, the fixation of the normal value on the basis of those sales is totally unjustified, as the products are not comparable. It is requested that the normal value may be determined based on the cost of production and not on the

sale price of a high quality product sold in the Nepal market. The decision in the case of Haldor Topsoe is not applicable since the sale in the Nepal market by M/s Pashupati Oxide is not of comparable goods.

4. M/S UNNAT INDUSTRIES(P) LTD.

- (i) The Authority has rejected the domestic sales on the ground that since the goods sold in the domestic market have been manufactured from recycled raw material, it is not comparable to the export goods. In this regard it is submitted that zinc oxide in Nepal and in India is manufactured from various types of materials, zinc ingots, zinc dross, zinc ash, etc. The raw material affects the recovery rate of zinc from that raw material, but does not affect the quality of the finished zinc oxide. The zinc oxide sold in the Indian market and the Nepal market is therefore comparable. In fact, we understand that the petitioners are also manufacturing zinc oxide from recycled materials and that has been taken into consideration for the purpose of standing and injury. It is also submitted that if a distinction is to be made based on the starting raw material, then separate margins for dumping and injury may be determined based on the starting raw material. In any case, the goods sold by M/s Pashupati Oxide Udyog Ltd. are not comparable to the zinc oxide manufactured by this exporter on account of quality.
- (ii) The decision of Haldor Topsoe is not applicable since it does not lay down a proposition that domestic sales of the exporter are to be disregarded in preference to the sales of other manufacturers.

5. M/S SWASTIC METAL INDUSTRIES

It is submitted that the domestic sales of Pashupati Udyog are not comparable to the sales of this exporter. Therefore the only available option is to determine the normal value based on the cost of production. If this basis were adopted, there would not be any margin of dumping. The decision of Haldor Topsoe is not applicable as it related to comparable goods and not for goods, which vary significantly in quality.

6. M/S PASHUPATI METAL INDUSTRIES

It is submitted that the goods in the Nepal market and in the Indian market are of different qualities. In these circumstances, an analysis was required to be made between the quality and the price. The sales in the local market are in some instances of lower quality than of the exports. It is requested that an appropriate adjustment may be made on this account. It is further submitted that in any case the sales of Pashupati Oxide Udyog are not comparable, as the goods are of a superior quality. The normal value may therefore kindly be determined either based on the sales by this exporter or on the basis of the cost of production.

EXAMINATION BY AUTHORITY

Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub section (6); or
 - (b) the cost of production of the same article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The normal value and ex-factory export price determination is illustrated below.

1. M/S PASHUPATI OXIDE UDYOG LIMITED, SONAPUR, NEPAL

The Authority notes the various submissions made by various interested parties. The Authority has referenced the normal value on the basis of the weighted average domestic selling price of the subject goods in the domestic market during the Period of Investigation (POI) and has considered adjustments on account of credit cost and handling on the domestic selling price. As regards the level of trade adjustment and quantity discount adjustment, the Authority notes that there is sale of subject goods by the exporter in the domestic market during the POI only to the actual users and that there is no sale made to a trader in the domestic market during the POI and therefore the price differentiation on account of level of trade cannot be evaluated in this market. The Authority also notes that there has been no quantification on account of any extra sales and distribution expenses which have been incurred by the exporter on account of selling directly to the actual users in the domestic market. Also the Authority notes that the

domestic selling price policy of the exporter in the domestic market primarily considers service and quality as two parameters and that there has been no evidence on account of any extra price realisation from the customers on account of their being actual users in the domestic market. The Authority has therefore not granted any adjustment on account of the level of trade. Also on the sales documents both on domestic market and on export market, there is no indication of any discounts being offered on higher account of quantity sales. The Authority has therefore not granted any adjustment on account of quantity discounts since these are not evidenced.

The Authority notes that it has been indicated in response to the disclosure statement that quality of the goods sold by the exporter in the domestic market are superior and that reliance cannot be made on these domestic sales to determine the normal value of such goods. The Authority holds that the argument on a superior quality goods in the domestic market has been raised by the exporter in response to the disclosure statement only and was never indicated during the investigation or during the time of verification. The exporter had indicated that the better price realisation in the domestic market is on account of service and quality and that the Authority has considered the same in the context of the exporter's claim that the domestic price is higher because of its sales being to the actual users. The issue of quality was not per se an issue highlighted by the exporter for claim of any quality adjustment or for the purpose of disregarding the domestic sales as not being comparable to the exports sales. The Authority therefore does not find any justification to consider this argument of discarding the domestic selling prices and placing reliance on the cost of production.

The Authority has therefore allowed adjustment on account of credit cost and handling to an extent of ****\$/MT and ****\$/MT respectively.

The normal value of the basis of these adjustments comes to ****\$/MT.

As regards ex-factory export price, the Authority has granted adjustments on account of handling, export tax, certificate of origin charges, duty drawback, bank guarantee commission and credit on the FOB price during the POI to an extent of ****\$/MT, ****\$/MT, ****\$/MT, ****\$/MT, ****\$/MT, and ****\$/MT respectively.

The ex-factory export price on the basis of the above adjustments comes to ****\$/MT.

2. M/\$ ASIAN METALS, BIRGANJ, NEPAL

The Authority notes that the exporter has sold inferior quality goods in the domestic market whose domestic sales price cannot be compared with the export price of subject goods exporter to India during the POI. The Authority in this regard notes that as per Section 9A(1) (c) the normal value implies the comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the Rules made under Sub-section (6).

In response to this, the exporter in the disclosure statement has mentioned that the product under consideration is only zinc oxide and there is no further quantification as regards quality. The difference in the quality is at best an adjustment issue and that the domestic sales cannot be disregarded. Also there is nothing on record to show that the zinc oxide sold by M/s Pashupati Oxide Udyog is of comparable quality to the exports made by M/s Asian Metals. The Authority noting these submissions hold that the domestic selling prices of the subject goods in the POI by the exporter are significantly lower than the prevailing domestic selling prices in Nepal. The Authority also notes that it has been indicated by the exporter that these are of the inferior quality. The exporter has at no point of time claimed any adjustment on account of quality. Also the Authority notes that on the basis of comparison with the constructed cost of production for the comparable goods exported to India, the domestic selling prices of such inferior goods would also not be in the ordinary course of trade. The Authority therefore holds that the prices of the domestic goods being of inferior quality are not comparable to the goods exported by the exporter to India during the POI.

The Authority in this regard recalls the judgement of Hon'ble Supreme Court in case of M/s Haldor and Topsoe (Exports of Catalysts from Denmark). The Authority notes that in event of domestic selling prices of like article not being available, the judgement when read with Section 9A(1) (c) permitted referring the representative domestic selling price of Like Article of other producer/exporter in Nepal. The Authority has referenced the domestic selling price of another producer/exporter who has been selling the subject goods in the domestic market in sufficient quantity for quite some time including POI for determining the Normal Value for this exporter as well.

The Normal Value has therefore been referenced as ****\$/MT.

The Authority for the determination of the ex-factory export price has considered adjustments from FOB export price on account of insurance, export tax, duty drawback and bank guarantee commission to an extent of ****, ****, **** and **** \$/MT respectively.

The ex-factory export price is considered as .****\$/MT.

3. M/S SHREE PASHUPATI RASAYANIK UDYOG (p) LTD., KATHMANDU, NEPAL

The Authority notes that the exporter has not sold the subject goods in the domestic market during the POI and nor has exported the subject goods during the POI to countries other than India.

The Authority notes that the exporter has indicated that the domestic selling price of M/s Pashupati Oxide Udyog cannot be referenced for them as M/s Pashupati Oxide Udyog's sells quality zinc oxide in the domestic market. Also the judgement in case of M/s Haldor and Topsoe is not applicable as the goods are not comparable. The Authority notes that the sales of M/s Pashupati Oxide Udyog are in sufficient quantity

and are representative of the domestic selling prices of zinc oxide in Nepal. The exporter has not quantified any adjustment on account of quality which can be accorded as a matter of adjustment in their selling price to India. The Authority in this event holds that the determination of the normal value is to be made as per Section 9 A(1) (c) and the judgement in M/s Haldor & Topsoe case.

The Authority notes that as per Section 9A(1) (c) the normal value implies the comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the Rules made under Sub-section (6).

The Authority in this regard recalls the judgement of Hon'ble Supreme Court in case of M/s Haldor and Topsoe (Exports of Catalysts from Denmark). The Authority has referenced the representative domestic selling price of Like Article of other producer/exporter in Nepal who has been selling the subject goods in the domestic market in sufficient quantity for quite some time including POI. The Authority has referenced the Normal Value of other producer/exporter in Nepal as the representative Normal Value for this exporter as well. The Normal Value comes to ****\$/MT.

The Authority for the determination of the ex-factory export price has considered adjustments from FOB export price on account of insurance, export tax, duty drawback and bank guarantee commission to an extent of ****, ****, **** and **** \$/MT respectively.

The ex-factory export price is considered as .****\$/MT.

4. M/S UNNAT INDUSTRIES (P) LTD., DUHABI, NEPAL

The Authority notes that the exporter has sold subject goods in the domestic market which have been manufactured from the recycled raw material and that the domestic selling price and cost of production of such recycled goods are significantly different from the export prices of the subject goods exported to India.

The Authority notes that in response to the disclosure the exporter has indicated that zinc oxide in Nepal and in India are manufactured by various types of raw materials and that the raw material affects the recovery rate of zinc oxide from that of the raw material but does not affect the quality of the finished zinc oxide. The Authority notes that the domestic selling prices of the recycled material when compared with the constructed cost of production, for the like article as exported to India, indicates that the domestic sales are not in the ordinary course of trade. The Authority holds that this also supports the conclusion of the Authority that goods sold in the domestic market and that exported to India are not comparable. The exporter has also submitted that the domestic material sold is of inferior quality. As regards the submission of the exporter that the domestic industry in India also manufactures the goods from the recycled material, the Authority holds that the comparison of dumping and injury margins have been made on comparable products and that any exclusion of the recycled material from the total

domestic production in the country, would only improve the standing of the petitioner. The Authority therefore under these circumstances recalls the Section 9 A (1) (c) and the judgement in case of M/s Haldor and Topsoe and considers it appropriate to reference these two.

The Authority notes that as per Section 9A(1) (c) the normal value implies the comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the Rules made under Sub-section (6).

The Authority in this regard recalls the judgement of Hon'ble Supreme Court in case of M/s Haldor and Topsoe (Exports of Catalysts from Denmark) The Authority has referenced the representative domestic selling price of Like Article of other producer/exporter in Nepal who has been selling the subject goods in the domestic market in sufficient quantity for quite some time including POI. The Authority has referenced the Normal Value of other producer/exporter in Nepal as the representative Normal Value for this exporter as well.

The Normal Value comes to ****\$/MT.

The Authority for the determination of the ex-factory export price has considered adjustments from FOB on account of export tax, certificate of origin charges, credit cost, duty drawback and bank guarantee commission to an extent of ****, ****, **** and ****.

The ex-factory export price is considered as ****\$/MT.

5. M/S SWASTIC METAL INDUSTRIES, BIRAT NAGAR, NEPAL

The Authority notes that the exporter has sold the subject goods in the domestic market which are not in sufficient quantity. The Authority has therefore disregarded these domestic sales for not being in significant quantity.

The Authority notes that the exporter in response to the disclosure statement has indicted that the domestic sales of M/s Pashupati Oxide Udyog are not comparable with the sales made by them and therefore the cost of production should be adopted for working out the dumping margin. The Authority notes that no evidence has been provided as to why the two sales are not similar. The Authority also notes that if there was an issue regarding quality adjustment, the same has also not been quantified. The Authority in this regard recalls the judgement of Hon'ble Supreme Court in case of M/s Haldor and Topsoe (Exports of Catalysts from Denmark). The Authority has referenced the representative domestic selling price of Like Article of other producer/exporter in Nepal who has been selling the subject goods in the domestic market in sufficient quantity for quite some time including POI. The Authority has referenced the Normal Value of other producer/exporter in Nepal as the representative Normal Value for this exporter as well.

The Normal Value comes to ****\$/MT.

The Authority for the determination of the ex-factory export price has considered adjustments from FOB on account of export tax, certificate of origin charges, credit cost, duty drawback and bank guarantee commission to an extent of ****, ****, **** and ****\$/MT respectively.

The ex-factory export price is considered as ****\$/MT.

6. M/S PASHUPATI METAL INDUSTRIES, BIRAT NAGAR, NEPAL

The Authority notes that the exporter has sold the subject goods in the domestic market of different grades and quality(second quality). Keeping in view that the quality of goods are entirely different in the domestic and export market, the Authority proposes to disregard the domestic selling price of the inferior quality subject goods during the POI, as they are not like article to the goods exported to India.

The Authority notes that the exporter in response to the disclosure statement has submitted that the goods sold by M/s Pashupati Oxide Udyog are of superior quality and therefore cannot be considered for determination of the normal value for them. The Authority in this regard notes that no quantification has been provided by the exporter for any quality adjustments and further earlier in their response they had indicated that their goods to be of inferior quality and therefore the Authority considers that the representative domestic selling price of the subject goods in Nepal need to be referenced on the basis of the selling prices of the said subject goods sold by other exporters/producers in Nepal.

The Authority in this regard recalls the judgement of Hon'ble Supreme Court in case of M/s Haldor and Topsoe (Exports of Catalysts from Denmark). The Authority has referenced the representative domestic selling price of Like Article of other producer/exporter in Nepal who has been selling the subject goods in the domestic market in sufficient quantity for quite some time including POI. The Authority has referenced the Normal Value of other producer/exporter in Nepal as the representative Normal Value for this exporter as well.

The Normal Value comes to ****\$/MT.

The Authority for the determination of the ex-factory export price has considered adjustments from FOB on account of export tax, certificate of origin charges, credit cost, duty drawback and bank guarantee commission to an extent of ****, ****, ****, **** and **** \$/MT respectively.

The ex-factory export price is considered as ****\$/MT.

5. DUMPING-COMPARISON OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE

The rules relating to comparison provides as follows:

“While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability.”

The Authority has carried out comparison of weighted average normal value with the weighted average ex-factory export price for evaluation of dumping margin.

The dumping margin for the producers/exporters of the subject goods in the subject country are as under:--

Exporter/producers	Normal value (\$/MT)	Normal value (\$/MT)	Export price (\$/MT)	Dumping margin(%)
<u>Nepal</u>				
1. M/s Pashupati Oxide Udyog Limited, Sonapur, Nepal.	****	****	****	15.1
	****	****	****	22
2. M/s Asian Metals, Birganj, Nepal	****	****	****	20.05
3. M/s Shree Pashupati Rasayanik Udyog (P) Ltd. Kathmandu	****	****	****	12.16
4. M/s Unnat Industries (P) Ltd. Duhabi.	****	****	****	17.03
5. M/s Swastic Metal Industries, Birat Nagar				
6. M/s Pashupati Metal Industries, Birat Nagar, Nepal	****	****	****	23.2
7. Other producers/exporters	****	****	****	23.2

For the residual exporters of subject goods from Nepal, the highest dumping margin has been referenced and also highest anti dumping duties have been recommended as indicated in the following para.

6. INJURY AND CAUSAL LINK

Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, “.....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles .” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree

For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

The following submissions have been made by various interested parties

A. DOMESTIC INDUSTRY

- (i) The industry is suffering from dumping of Zinc Oxide in the country. The letters exchanged by the industry with the various Govt. Departments and with the Directorate are testimony to this effect.
- (ii) Demand of the subject goods has not declined. However market share of imports in the demand of zinc oxide has increased significantly.
- (iii) Though there is increase in production, capacity utilisation and sales, the selling price of the domestic industry has declined as a percentage of zinc prices on account of the dumped imports.
- (iv) The landed value of dumped imports is much below the cost of production and non injurious price of the domestic industry, causing severe price depression/suppression in the Indian market.

- (v) The landed value of imported material is significantly below the selling price of the domestic industry, causing severe price undercutting in the Indian market.
- (vi) Profitability of the domestic industry have been severely eroded.
- (vii) Export price has declined both in terms of rupee and US\$.
- (viii) Large number of manufacturing units have either suspended their production or completely closed their operations due to dumped imports.
- (ix) Cost of production of domestic industry increased significantly. However, the domestic industry has not been able to proportionately increase its selling prices, causing financial losses to the domestic industry.
- (x) The final duties may be recommended in US dollar terms so as there is no erosion on account of the exchange rate fluctuation

Subsequent to the disclosure, the following submissions have been made:-

We are grateful to the Authority for recommending the interim duties on variable basis. It is submitted that the final duties may also please be recommended in terms of US \$(fixed amounts) so that erosion in the quantum of protection does not take place on account of changes in the exchange rate.

B. EXPORTERS

- (i) The observations in the preliminary findings as regarding the Indo-Nepal Treaty are contrary to the decision of the Supreme Court in the case of Union of India Vs. Kamlakshi Finance Corporation Ltd. and Hyderabad Industries Limited and are in violation of the Article 141 of the Constitution of India.
- (ii) The exports from China are at prices fair below prices from Nepal and the quantities exported to India are also significantly higher. Therefore injury and causal link needs to be separately examined for Chinese exporters and exporters from Nepal. Cumulative assessment of injury is not called for in this case.

- (iii) Ms Pashupati Oxide Udyog have indicated that the six manufactures in Nepal share 4-5% of Indian market on a 4-5% of profit margin and this cannot lead to closure of 175 units in India. The injury to domestic industry is on account of imports from China and not from Nepal. M/s Pashupati Oxide have indicated that the Indo-Nepal Treaty has given the advantage to Nepalese exporter which has been given by the Government of India only

Subsequent to the disclosure, the following submissions have been made:-

It is submitted that the Indo-Nepal Treaty excludes the applicability of anti dumping provision. It is also submitted that injury if any to the Indian industry is caused by imports from China and not on account of imports from Nepal. It is also submitted that there is no causal link between the injury if any and the imports from Nepal. The competitive advantage of the exporters from Nepal arises on account of the duty benefit available under the Treaty. The exporters have access to duty free raw materials and were having facility of export to India without levy of basic and SAD during the period of investigation. These benefits arise on account of the policies of the Indian and Nepal government. In the examination of the causal link, the impact of the treaty is required to be examined. The lower cost and consequent better prices of exporters in Nepal is not a phenomenon arising from dumping but due to tariffs. In the absence of a causal link, no duties may be recommended against the exporters from Nepal.

The Authority after considering the above submissions notes and observes the following economic parameters with respect to domestic industry and the dumped subject goods:-

- (i) The imports of subject goods from Nepal were 257 MT in 1997-98 and have increased to 1244 MT in 1998-99 and further to 4211 MT in POI. The share of imports of subject goods from Nepal in total imports of subject goods have increased from 8.2% in 1997-98 to 18.9% in 1998-99 and to 35.34% in POI.
- ii). The capacity, production, capacity utilisation, domestic sales and selling prices for the years 1997-98, 1998-99, 1999-2000 and the Period of Investigation are as under:-

	1997-98	1998-99	1.4.99 to 30.9.2000 (POI)	POI Annualised
Production (MT)	8637	9504	15237	10158
Capacity utilisation	71.97%	79.25	84.65%	84.65%

Domestic Sales (MT)	6450	6702	11097	7398
Selling Prices (Rs/MT)	55568	53014	59102	59102

- (iii) The market share of the domestic industry for the subject goods was 14.6% in 1997-98 which increased to 15.6% in POI
- (iv) The total demand of the subject goods during the POI has been around 45000 MT (Annualised). The demand has not declined over the last years and therefore the demand has not been a contributing factor to the injury caused to the domestic industry.

Also in order to eliminate effect of any inefficiencies in the production process of the subject goods by Domestic Industry, which could be a contributing factor to the injury to the Domestic Industry, the Authority has determined a Non Injurious Price (NIP) for the Domestic Industry during the POI. The Non Injurious Price has been evaluated by normating and benchmarking the best utilisation and consumption norms of various constituent entities viz Raw material, utilities and consumables etc for the Domestic Industry in POI.

- (v) The low landed values of dumped subject goods have caused price suppression and price undercutting in POI. The Net Sales Realisation (NSR) of Zinc Oxide by the Domestic Industry in POI has been lower than the Non Injurious Price (NIP) for the Domestic Industry during the POI. Also the domestic industry has lost certain customers on account of the price undercutting by the dumped imports.
- (vi) The Authority notes that the exporters from Nepal have submitted that the anti dumping duties are not leviable under the Indo-Nepal Treaty. The exporters have also cited a judgement of Supreme Court in the case of Union of India Vs Kamalakshi Finance Corporation Ltd and Hyderabad Industries Limited which holds anti dumping duty also as a custom duty. The Authority also recalls the observations made in the Preliminary Findings dated 6.8.2001 in which it was held that "levy of anti dumping duty being a remedial measure prescribed under the WTO Rules is primarily exporter specific exporting from the countries being investigated on the aspect of dumping. The levy of anti dumping duty has been done only on those exporters who have resorted to dumping and, have, therefore, caused injury to the domestic industry. The levy of anti dumping duty is thus not a generic duty but only a corrective remedial measure to offset the injury caused by dumping". Also the Authority recalls the findings in the Preliminary determination dated 25.9.2001 in respect of imports of Acrylic Yarn from Nepal in which the Authority in Para K(33) had observed that

“even if it is assumed that anti dumping duty is a kind of custom duty, the same is chargeable on the imports from Nepal as the Indo-Nepal Treaty does not give a blanket immunity from imposition of any kind of custom duty (or more specifically anti dumping duty) on imports from Nepal.”. The Authority therefore holds that as such there is no blanket immunity regarding non-levy of anti dumping duty on imports from Nepal under the Indo-Nepal Treaty and therefore the Authority notes that any injury on account of dumping needs to be appropriately redressed by the mechanism of anti dumping duties as per the provisions of anti dumping duties.

The Authority also notes the various submissions made by the exporters from Nepal regarding the duty concession available to them under the Indo-Nepal Treaty and evaluation of the impact of this on the injury to the Domestic Industry. The Authority holds that the extent of price undercutting due to low dumped imports has been determined as per the consistent practice of determining the injury margin. Further in the case of M/s Haldor & Topsoe, the Hon'ble Supreme Court in its order dated 20.7.2000 has also upheld justification of two anti dumping duties as there were two rates of customs duties prevailing on the subject goods.

The Authority notes that a similar situation exists under the Indo-Nepal Treaty where also though there is an exemption of certain custom duties, the determination of price suppression and injury margin is to be evaluated as per the applicable customs duties as also upheld by the Hon'ble Supreme Court in the M/s Haldor Topsoe judgement.

Further the Authority notes that it has been established that the exporters from the subject country are dumping the said subject goods. The purpose of levy of anti dumping duty is only to bring such export prices at non-dumped or non injurious level. Such export prices as corrected by anti dumping duty would continue to avail the benefits of duty concession as prevalent under the Indo-Nepal Treaty.

7. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping, which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

The Authority also recognises that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products which may be manufactured/produced with the usage of the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products are, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would

remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice of the subject goods to the consumers. Imposition of anti-dumping measures would also not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

LANDED VALUE

The landed value has been determined for the subject goods after adding on weighted average CIF export price, the applicable level of custom duties (except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A) and one percent towards landing charges.

D. CONCLUSIONS:

It is seen, after considering the foregoing that:

- a. The subject goods in all forms originating in or exported from the subject country have been exported to India below its normal value.
- b. The domestic industry has suffered material injury by way of depressed Net Sales Realization (NSR) on account of price suppression caused by low landed prices of the dumped subject goods from the subject country leading to financial losses.
- c. The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country. The authority recommends anti-dumping duty on imports of all forms/grades of subject goods falling under Chapter 28 originating in or exported from the subject country. Zinc Oxide of any grade/purity if imported under any other Head viz. 38123001 and 28179000 would also attract the anti-dumping duties.
- d. It was considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less so as to remove the injury caused to the domestic industry. Accordingly, it is proposed that definitive anti dumping duties equal to difference between amount as set out below in Column 3 and landed value be imposed, by the Central Government on all grades of subject goods originating in or exported from Nepal falling under Chapter 28 of the Customs sub-heading 2817.0001 of the Customs Tariff.

1	2	3
S.No	Name of the exporter/ producer	Amount (US\$/MT)
1.	M/s Pashupati Oxide Udyog Limited, Sonapur, Nepal.	1377.25
2.	M/s Asian Metals, Birganj, Nepal	1372.11
3	M/s Shree Pashupati Rasayanik Udyog (P) Ltd. Kathmandu	1413.60
4.	M/s Unnat Industries (P) Ltd. Duhabi.	1413.60
5.	M/s Swastic Metal Industries, Birat Nagar	1385.94
6	M/s Pashupati Metal Industries, Birat Nagar, Nepal	1390.42
7.	Other producers/exporter	1413.60

Subject to above, the Authority confirms the preliminary finding dated 6.8.2001.

An Appeal against this order shall lie to the Customs, Excise, Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act supra.

L. V SAPTHARISHI, Designated Authority

